विवेकानन्द केन्द्र समाचार २०२२-२३

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

अनुक्रमणिका

- महासचिव का पत्र
- वसुधैव कुटुम्बकम्
- एक झलक
- २०२२-२३ की मुख्य गतिविधियां
- नियमित गतिविधियां
- सी-20 में विवेकानन्द केन्द्र
- विवेकानन्द केन्द्र की परियोजनाओं (प्रकल्पों) का अवलोकन
- स्वास्थ्य सेवा
- ग्राम विकास
- भारतीय संस्कृति
- प्रकाशन
- शिक्षा
- विवेकानन्द केन्द्र के कार्यों का प्रान्तशः अवलोकन
- दक्षिण प्रान्त
- महाराष्ट्र प्रान्त
- गुजरात प्रान्त
- राजस्थान प्रान्त
- मध्य प्रान्त
- हरियाणा प्रान्त
- पंजाब प्रान्त
- उत्तर प्रान्त
- उत्तर प्रदेश प्रान्त
- अरुणाचल प्रदेश प्रान्त
- असम प्रान्त
- पश्चिम प्रान्त
- बिहार प्रान्त
- ओडिशा प्रान्त
- तेलुगु प्रान्त
- कन्याकुमारी स्थिति स्मारक और प्रदर्शनियाँ
- विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी में विभिन्न गतिविधियां
- शिविर कैलेण्डर – २०२३
- श्रद्धांजलि
- विवेकानन्द शिला स्मारक के कुछ महत्त्वपूर्ण दर्शनार्थियों की सूची (अप्रैल २०२२ से मार्च २०२३)
- क्या आप स्वामी विवेकानन्द की पुकार सुन रहे हैं?
- आह्वान
- आपका योगदान महत्त्वपूर्ण है
- सोशल मीडिया पर विवेकानन्द केन्द्र

महासचिव का पत्र

प्रिय बहनों और भाइयों,

भारतमाता- कन्याकुमारी के चरणों से नमस्कार!

वर्ष २०२२-२३ का विवेकानन्द केन्द्र समाचार "वसुधैव कुटुम्बकम्" पर केन्द्रित है।

दिसम्बर, २०२२ से नवम्बर, २०२३ तक भारत के पास G20 की अध्यक्षता रहेगी। उथल-पुथल के इस युग में, पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है क्योंकि यही राष्ट्र मार्ग दिखा सकता है। आज का वैश्विक परिदृश्य हमें महान ब्रिटिश इतिहासकार डॉ. अर्नोल्ड जोसेफ टॉयनबी (१८८९-१९७५) के शब्दों का स्मरण दिलाता है -

'यह पहले से ही स्पष्ट होता जा रहा है कि जिस अध्याय की शुरुआत पश्चिमी थी, यदि उसे मानव जाति के आत्म-विनाश में समाप्त नहीं होना है, तो उसकी परिणति भारतीय पद्धति से होनी होगी। मानव इतिहास के इस अत्यन्त संकटकाल में प्राचीन हिन्दू मार्ग ही एकमात्र उद्धार का मार्ग है। इसमें वह दृष्टिकोण और चेतना विद्यमान है जो मानव जाति का एक साथ, एक कुटुम्ब की ओर विकास कर सकती है।'

भारत ने G20 के लिए जो थीम "वसुधैव कुटुम्बकम्" या "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" रखी है, वह हमारी भूमिका को बहुत स्पष्ट करती है। विवेकानन्द केन्द्र इसके एक कार्यक्षेत्र - 'सिविल सोसायटी 20', संक्षेप में सी20 में संस्थागत भागीदार है। केन्द्र - "वसुधैव कुटुम्बकम्" (मई, २०२३) और "विविधता, समावेश, पारस्परिक सम्मान" (जून, २०२३) विषयों पर दो अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करेगा। लगभग सभी राज्यों में विभिन्न संगठनों और संस्थानों को शामिल करके विभिन्न चौपाल, समाजशालाएं आदि आयोजित की जा रही हैं।

इस वर्ष के केन्द्र समाचार में विवेकानन्द केन्द्र के पूर्व अध्यक्ष, स्वर्गीय माननीय पी. परमेश्वरनजी (१९२२-२०१९) का एक वैचारिक जागरणवाला मुख्य आलेख को सम्मिलित किया गया है। "स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव" मनाने के लिए, केन्द्र ने राजस्थान, ओडिशा और उत्तर प्रदेश में सन्देश यात्राएँ आयोजित कीं। हमेशा की तरह, समाचार स्वामी विवेकानन्द के सन्देश को प्रसारित करने के लिए प्रान्तशः गतिविधियों की वृत्तान्त प्रस्तुत करता है।

जीवनव्रतियों के पहले बैच का प्रशिक्षण अगस्त, १९७३ में प्रारम्भ हुआ था। अतः प्रशिक्षण की प्रासंगिकता को केन्द्र में रखकर विवेकानन्द केन्द्र ने अगस्त २०२३ से जुलाई २०२४ तक विशेष प्रशिक्षण वर्ष की योजना बनाई है – अर्थात इस अवधि के दौरान सभी कार्यकर्ताओं का चरण-वार विशेष प्रशिक्षण होगा।

केन्द्र की सभी गतिविधियों का समर्थन करने के लिए आप सदैव हमारे साथ हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विषय पर केन्द्रित इस अंक को पढ़ने के बाद, अपने अनुभवों को हमारे साथ साझा करें। हम आपके मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और समर्थन की आशा करते हैं।

प्रार्थनाओं के साथ,

सादर,

भानुदास धाक्रस

महासचिव

वसुधैव कुटुम्बकम्

(मानव धर्म अथवा बाज़ार की शक्तियाँ? – चयन हमारा)

- पी. परमेश्वरन्,
(पूर्व अध्यक्ष, विवेकानन्द केन्द्र)

अति प्राचीन काल से इस पवित्र देश भारत में एक भव्य चिन्तन चला आ रहा है और कई शताब्दियों से वह गति भी पकड़ रहा है। यह मात्र चिन्तन ही नहीं, बल्कि एक भाव था जिसका व्यवहार दैनिक जीवन में उस समय तक किया जाता रहा जब तक कि वह संस्कृति एवं सभ्यता में परिणत नहीं हो गया। यह चिन्तन, एक कविमनीषी ऋषि के द्वारा सुप्रसिद्ध संस्कृत सुभाषित के रूप में बहुत ही सुन्दरता से वर्णित किया गया है – "अयं निज परैवेति, ज्ञानना लघु चेतसाम, उदार चरितानाम तु, वसुधैव कुटुम्बकम्" - संकीर्ण दृष्टिवाले मनुष्य संसार को 'मेरा' और 'तुम्हारा' में विभाजित कर देते हैं जबकि उदार-हृदय व्यक्ति सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार - स्वयं के घर के समान मानते हैं। यह कवि की केवल कल्पना मात्र ही नहीं अपितु एक गहन अनुभूति 'सर्वोच्च सत्य' का परिणाम था - **सर्वं खल्विदं ब्रह्म**: - अर्थात् जो कुछ अस्तित्व में है, केवल ब्रह्म ही है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उस एकमात्र सत्य की ही अभिव्यक्ति है; 'एक' - जो अनेक को अभिव्यक्त करे।

भारत का सम्पूर्ण इतिहास इस अनुभव को प्रत्येक व्यक्ति और समाज के दैनिक जीवन में व्यक्त करने का एक प्रयत्न मात्र है। निश्चित रूप से विविधता और अनेकरूपता भी वहाँ विद्यमान थी, परन्तु आधार रूप में वहाँ एकता ही थी। कहावत है - अनेकता में एकता। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, निजी से राष्ट्रीय स्तर तक, प्रतिबिम्बित होती थी। हमारे दूरदर्शी और साहसी पूर्वजों ने इस भव्य अनुभव को केवल भारतीय सीमाओं तक ही सीमित नहीं रखा। मानवता के लिए उनका प्रेम और चिन्ता इतनी गहन थी कि वे इसे विश्व के सुदूर स्थानों तक भी ले गए। एकता का सन्देश व्यवहार और उदाहरण के द्वारा फैलाया गया और विश्व इतिहास में इस तथ्य के साक्ष्य भी विद्यमान हैं। विश्व के प्रत्येक भाग में भारतीय सांस्कृतिक राजदूतों की छाप स्पष्टतः दिखाई देती है और अनुभव की जाती है। सम्भवतः वह इतिहास का अत्यन्त ही भव्य काल रहा होगा।

सत्य के प्रति प्रतिबद्ध अनुसंधानकर्ताओं ने अपने गहन अध्ययन के द्वारा यहाँ तक ज्ञात किया कि यूनानी और रोमन जैसी पश्चिमी सभ्यताओं, यूनानी और लैटिन भाषाओं का जन्म स्थान भारत ही था। तत्पश्चात् वे धीरे-धीरे अन्य महाद्वीपों में फैली तथा उन दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच गईं। ऐसा किसी सैनिक-विजय के द्वारा नहीं हुआ बल्कि एक जीवन्त संस्कृति के शनैः शनैः विस्तार के फलस्वरूप हुआ। परन्तु बाद में पश्चिम के औपनिवेशिक विजेताओं ने इतिहास को पूरी तरह उलट दिया और यह प्रचारित किया गया कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता को इस देश में विदेशी आक्रमणकारी विजेताओं द्वारा लाया गया है। लेकिन हमें उन विजेताओं को अकेला छोड़ना होगा, क्योंकि 'सत्य' स्वयं धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से विजेता के रूप में प्रकट हो रहा है और निःसन्देह वह अपनी शक्ति और सच्चाई को स्थापित करके रहेगा।

पश्चिम स्वयं को शेष विश्व से अलग-थलग करते हुए यूनान और रोम के स्वर्णिम दिनों के पश्चात् मध्यकाल के अंधेरे में डूब गया। अन्त में जब वह यूनानी संस्कृति के पुनर्जागरण के झटके से जाग्रत हुआ तब ईसाई मिशनरी

धर्मोत्साह तथा ने साम्राज्यवादी विजय की महत्त्वाकांक्षाओं की प्रेरणा के फलस्वरूप बाहर की ओर देखने लगा। यूरोप के देशों ने शृंखलाबद्ध आक्रमणों द्वारा एशिया और अफ्रीका के महाद्वीपों को जीतना प्रारम्भ कर दिया। विश्व के उन भागों में विद्यमान प्राचीन शान्तिपूर्ण सभ्यताओं का विध्वंस कर, उन्हें भस्मीभूत करने का यह एक योजनाबद्ध प्रयास था। इन विजेताओं द्वारा किया गया 'ध्वंस' इन महाद्वीपों में आज भी दिखाई पड़ रहा है। इस प्रकार के औपनिवेशिक आक्रमणों का मूल कारण वह 'विश्व दृष्टिकोण' है, जिसकी प्रेरणा उन्हें सम्प्रदायवादी और असहिष्णु धार्मिक ग्रन्थों से प्राप्त हुई। यह भारतीय 'विश्व दृष्टिकोण' – **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** के पूर्णतया विपरीत है। -

पश्चिम के उपनिवेशों की उत्प्रेरणा के प्रयोजन व्यापार और रिलीजन थे। उनके द्वारा अपनाये गए तरीकों में सैनिक द्वारा विजय प्राप्त करना तथा धूर्तता और धोखे से सफलता प्राप्त करना था। गत तीन-चार शताब्दियों का – तथाकथित आधुनिक इतिहास - इस प्रकार के षड़यंत्रकारी एवं सिद्धान्तहीन विजयों और अन्य देशों की सीमाओं तथा प्रजा को विदेशी सभ्यता द्वारा अपने नियंत्रण में लाने के उदाहरणों से भरा है। इस 'विश्व दृष्टिकोण' के तर्क कौशल को व्यवहार में परिणत कर अन्ततः हमें वर्तमान स्थिति में ले आया गया है, जहाँ 'वैश्विक बाज़ार; के नारे के साथ पश्चिम विश्व के शेष भाग पर छा गया है। सैनिक शक्ति, संगठित धार्मिक उपदेशों, आर्थिक शोषण और बौद्धिक जोड़-तोड़ के द्वारा पश्चिम ने शेष विश्व पर अपना आधिपत्य जमा लिया है। विश्व को वैश्विक बाज़ार में बदल दिया गया है, जो बाज़ार की समस्त ताकरों का संचालन कर, उसके भयानक परिणामों से शेष विश्व को ही नहीं बल्कि स्वयं पश्चिम को भी पीडित-परेशान कर रहा है।

आज मानवता का ध्रुवीकरण 'विश्व-एक परिवार' और 'विश्व-एक बाजार' दो छोरों पर है। घर-परिवार तथा बाज़ार के नियम विस्तृत रूप से अलग-अलग हैं। वे एक-दूसरे से भिन्न ही नहीं बल्कि वास्तव में एक दूसरे के विरुद्ध भी हैं। घर-परिवार को नियंत्रित करनेवाला नियम 'प्रेम' है जबकि बाज़ार 'धूर्तता और प्रतिस्पर्धा' के नियम से संचालित होता है। 'घर-परिवार' भावनाओं की एकरूपता पर निर्मित होता है जबकि बाज़ार का निर्माण प्रतिद्वन्द्वी रुचियों पर होता है। परिवार शान्ति चाहता है, जबकि बाज़ार लाभ (मुनाफा)। घर-परिवार की स्थापना आध्यात्मिक मूल्यों पर होती है जबकि बाज़ार केवल भौतिक मूल्य ही जानता है। घर-परिवार का आधार पारस्परिक सहयोग है, परन्तु बाज़ार में पारस्परिक शोषण ही मान्यता प्राप्त नीति है। बाज़ार एक अश्लील उपभोक्तावाद को बढ़ावा देता है, परन्तु घर-परिवार नियंत्रित व मूल्यआधारित उपयोग को ही बढ़ाता है। आज मानवता के सम्मुख यक्ष-प्रश्न उपस्थित है - इन दोनों में से किस आदर्श का अनुसरण किया जाए? कौन-से 'विश्व दृष्टिकोण' को स्वीकार किया जाए? और किस जीवन-शैली को अपनाया जाए? पश्चिमी प्रयोग को अपनाकर देख लिया गया है और वह अपर्याप्त ही जान पड़ा तथा एक शान्तिपूर्ण और समृद्धिशाली विश्व-व्यवस्था को बनाए रखने में यह पूरी तरह असमर्थ है। मानवता चौराहे पर खड़ी है।

आर्नोल्ड टॉयनबी जैसे पश्चिम के अनेकों विचारकों ने स्पष्ट रूप से इंगित किया है कि केवल पूर्वी तरीका ही है, जो इस पृथ्वी पर शान्ति व सामंजस्य ला सकता है और मानव जाति की सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकता है। आज चयन करना है – **'मानव धर्म'** और **'बाजार की शक्तियों के बीच'** व **'वैश्विक परिवार'** और **'वैश्विक बाज़ार के मध्य'**। इसमें भारतीय दृष्टि बहुत ही स्पष्ट है। हमारे पुनर्जागरण के समस्त पथ-प्रदर्शकों व उनकी विशिष्ट मंडली ने -जिनमें सबसे प्रमुख प्रतिनिधिस्वरूप स्वामी विवेकानन्द हैं - इसकी

शक्तिशाली व्याख्या की है। स्वामीजी ने सौ वर्षों से अधिक पहले सशक्त शब्दों में कहा था, "सम्पूर्ण पश्चिम एक ज्वालामुखी के मुहाने पर खड़ा है जो ५० वर्षों के भीतर-भीतर फूट पड़ेगा और उस समय पश्चिम को बचानेवाला होगा - एकमात्र भारतीय उपनिषदों का सन्देश।" दुर्भाग्यवश उस मसीहा के इस सन्देश को गम्भीरता से नहीं लिया गया और यह ज्वालामुखी अनेक बार फटा है। पश्चिम के निष्कपट बुद्धिजीवी अपनी निराशा प्रकट कर रहे हैं।

एलेनोर स्टार्क ने स्वयं की निराशा को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द गिफ्ट अनओपन्ड' में इन शब्दों में व्यक्त किया है – **'कोलम्बस ने अमेरिका की भूमि की खोज की थी, परन्तु स्वामी विवेकानन्द ने तो अमेरिका की आत्मा को खोज निकाला।'** स्वामी विवेकानन्द ने 'पेपर ऑन हिन्दुज्म' में सुन्दरता से व्याख्या की है कि 'अमेरिका की आत्मा' से उनका क्या तात्पर्य था, **"हे स्वाधीनता की मातृभूमि कोलम्बिया, तू धन्य है! तूने अपने पड़ोसियों के रक्त से अपना हाथ कभी कलंकित नहीं किया, तूने अपने पड़ोसियों का सर्वस्व अपहरण कर सहज में ही धनी और सम्पन्न होने की चेष्टा नहीं की। अतएव तू ही सभ्य जातियों में अग्रणी होकर शान्ति-पताका फहराने की अधिकारिणी है।"** फिर इतिहास ने विश्व के शीत व प्रत्यक्ष युद्धों के साथ भिन्न मोड़ लिया। अमेरिका जो एक मुक्तिदाता था - स्वयं कमजोर राष्ट्रों का शोषणकर्ता बन गया। प्रजातंत्र और मानव अधिकारों के सद्गुणों को सुरक्षा प्रदान करने और उन्हें आगे बढ़ाने की अपेक्षा उसने अधिनायकवादी शासन और सैनिक षड़यंत्रकारी दलों को समर्थन देने व उनका परिपोषण करना प्रारम्भ कर दिया। धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक बहुलवाद के स्थान पर अमेरिका स्वयं, ईसाई धर्मोपदेश का प्रचारक और जिहादी कट्टरता का सबसे प्रमुख समर्थक बन गया है। जब ईसाई धर्मोपदेशक और बाज़ारवाद के साथ-साथ धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद अपने भयानक सिर उठा रहे हैं, अराजकता और भ्रांतियां उत्पन्न कर रहे हैं; ऐसी स्थिति में मानवता जीवन के एक वैकल्पिक मार्ग को पाने की आशा की एक किरण के लिए संघर्षरत है। इस संकट के समय भारत को अपनी भूमिका निर्णायक रूप में निभानी है और यह अधिकारपूर्वक कहना है कि 'मानव धर्म' ही, न कि 'बाज़ार की शक्तियाँ' मानवता के अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाएगा। परन्तु, इसके लिए, भारत को एक ऐसे प्रतिमान की स्थापना करनी पड़ेगी जिसका अनुकरण सम्पूर्ण विश्व कर सके।

संक्षेप में, समय की यही आवश्यकता है।

चेन्नई में ३ मई को विवेकानन्द केन्द्र के अध्यक्ष माननीय बालकृष्णनजी के जन्मदिन के अवसर पर।

एक झलक

राष्ट्रीय स्तर पर विवेकानन्द केन्द्र के कार्य का अवलोकन

प्रान्त : १५

राज्य : २६

केन्द्र शासित प्रदेश : ४

कुल जिले : ७०४

जिलों में केन्द्र कार्य : २४३

नगर स्थान : ११०

कार्य स्थान : १३५

नियोजित नगर स्थान : १२७

प्रकल्प : ४२

प्रकल्प स्थान : ६४०

संरक्षक : २,६०,७३५

दायित्ववान कार्यकर्ता : ७,३८४

• आर.के.पी.एस. (राष्ट्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर) :

• ४७५ प्रतिभागी

• पी. के.पी.एस. (प्रान्त कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर):

• ६९५ प्रतिभागी

• एस.के.पी.एस. (स्थानीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर):

• १,६८५ प्रतिभागी

• कुल : २,८५५ प्रतिभागी

ये संख्याएँ विभिन्न प्रान्तों, राज्यों, जिलों और कार्य-स्थानों में विवेकानन्द केन्द्र की व्यापक पहुँच और भागीदारी का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो इसकी गतिविधियों और पहलों के महत्त्वपूर्ण प्रभाव और पैमाने को दर्शाती हैं।

२०२२-२३ की मुख्य गतिविधियां

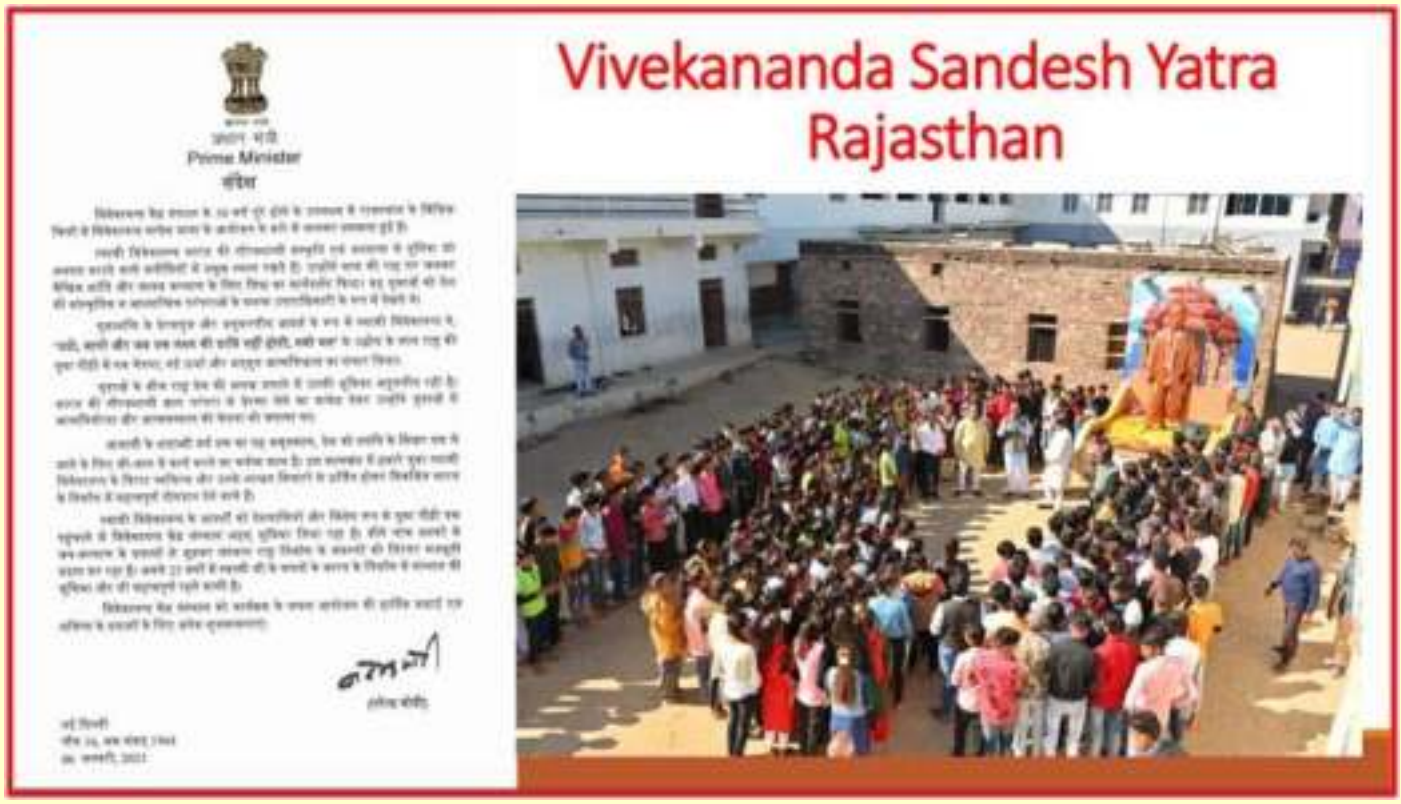

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी ने २०२२ में अपने ५१वें वर्ष में प्रवेश किया और यह महत्त्वपूर्ण वर्ष कई ऐसे आयोजनों का प्रतीक है जो इसके प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण और इसके संस्थापक मनानीय एकनाथजी रानडे के मिशन को सुदृढ़ करते हैं।

विवेकानन्द केन्द्र के कार्यकर्ता **"मनुष्य निर्माण और राष्ट्र पुनरुत्थान"** के अपने कार्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए प्रतिवर्ष प्रयत्न करते हैं।

केन्द्र के कार्य के तेजी से विस्तार की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण घटना राजस्थान, उत्तर प्रदेश और ओडिशा में यात्राओं का आयोजन था।

राजस्थान में, विवेकानन्द केन्द्र के ५० वर्ष और भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, ५० दिवसीय **"विवेकानन्द सन्देश यात्रा"** निकाली गई और स्वामी विवेकानन्द की खड़ी मूर्ति से सजे रथ के साथ लगभग ५० केन्द्र कार्यकर्ताओं

की टीम राजस्थान के सभी ३३ जिलों में गई। इस अनूठी पहल को केन्द्र सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय और कई समान विचारधारावाले संगठनों का समर्थन प्राप्त हुआ।

यात्रा को १९ नवम्बर, २०२२ को भारत के उपराष्ट्रपति महामहीम जगदीप धनखड़ तथा विवेकानन्द केन्द्र के अध्यक्ष माननीय बालाकृष्णनजी ने खेतड़ी से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा ७ जनवरी, २०२३ को जोधपुर में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में विवेकानन्द

केन्द्र की उपाध्यक्ष माननीय निवेदिता भिड़े की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

उत्तर प्रदेश द्वारा १२ जनवरी, २०२३ से ११ दिनों की **"विवेकानन्द सन्देश यात्रा"** निकाली गई और उत्तर प्रदेश के २० जिलों में यह रथयात्रा पहुँची।

ओडिशा प्रान्त ने २७ दिनों में ओडिशा के २० जिलों में **"उठो जागो - अमृत महोत्सव यात्रा"** का आयोजन किया।

यह यात्रा २५ दिसम्बर, २०२२ को भुवनेश्वर से शुरू हुई थी, जिसे श्रीमत स्वामी आत्मप्रभानन्दजी, अध्यक्ष, रामकृष्ण मठ, भुवनेश्वर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सार्वजनिक बैठकों और रैलियों में ६००० से अधिक लोग सहभागी हुए और ५५ महाविद्यालयों के लगभग ५००० छात्रों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

महाराष्ट्र प्रान्त ने कन्याकुमारी में **"युवा नेतृत्व विकास शिविर"** का आयोजन किया जिसमें ९४० युवा सम्मिलित हुए। इस युवा शिविर की तैयारी ६ महीने से अधिक समय तक चली, जिसकी शुरुआत स्वराज के ७५वें वर्ष पर एक परीक्षा से हुई। इस परीक्षा में ८१०० युवाओं ने भाग लिया। इसके बाद चयनित २३०० युवाओं के लिए ३१ एक दिवसीय शिविर लगाए गए। केन्द्र वर्ग और स्वाध्याय वर्ग के १२ सप्ताह के बाद अन्ततः कन्याकुमारी में आयोजित शिविर के लिए ९४० युवाओं का चयन हुआ।

"योग शास्त्र संगमम्" – विवेकानन्द केन्द्र ने २४ से २६ फरवरी, २०२३ की अवधि में विवेकानन्दपुरम, कन्याकुमारी में छठवीं अन्तर्राष्ट्रीय योग शास्त्र संगमम् का आयोजन किया। भारत क १६ राज्यों, सिंगापुर, बाली और अफगानिस्तान से २१२ पुरुषों और २०७ महिलाओं सहित कुल ४१९ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान ५ पूर्ण सत्र और ११ समानान्तर सत्र आयोजित किये गए। पी-एच.डी. शोधार्थियों, छात्रों, प्रोफेसरों, योग शिक्षक, योग चिकित्सक और योग सलाहकार द्वारा ११५ शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। २४ और २५ फरवरी को "योग शास्त्र संगमम्" में वाराणसी से **१२७ वर्षीय स्वामी शिवानन्द बाबाजी**, जो कि पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित हैं, विशेष रूप से उपस्थित थे। उनकी दिव्य उपस्थिति और योगिक जीवन-शैली हर किसी के लिए प्रेरणा और आशीर्वाद स्वरूप रही। जीवित योगी की उपस्थिति योगशास्त्र का एक अनुपम उदाहरण है। उद्घाटन सत्र के दौरान सम्मेलन की कार्यवाही का विवरण देनेवाली पुस्तक का विमोचन किया गया।

जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार ने तीसरा **"राष्ट्रीय जल पुरस्कार"** विवेकानन्द केन्द्र – नारडेप के "रामेश्वरम् में पारम्परिक जल निकायों को पुनर्जीवित और नवीनीकृत करने" के कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ एनजीओ श्रेणी में दूसरा पुरस्कार प्रदान किया।

अखिल भारतीय अधिकारी बैठक – २०२३

१०, ११ व १२ फरवरी, २०२३ को सोमनाथ, गुजरात में सम्पन्न

नियमित गतिविधियां

वर्ग

विवेकानन्द केन्द्र के प्रत्येक शाखा केन्द्र में सामान्यतः निम्नलिखित गतिविधियाँ नियमित रूप से होती हैं - केन्द्र वर्ग, योग वर्ग, संस्कार वर्ग और स्वाध्याय वर्ग। ये गतिविधियां कार्यकर्ताओं, शुभचिन्तकों और सामान्य-जनों से मिलने, उनसे बातचीत करने और परस्पर सम्बन्धों और संगठनों को मजबूत करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अवसर है। ये गतिविधियाँ कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के साधन के रूप में भी काम करती हैं।

केन्द्र वर्ग : यह एक साप्ताहिक वर्ग है। यह सभी कार्यकर्ताओं और हर आयुवर्ग की सामान्य जनता सहभागी होते हैं। २०२२-२०२३ के दौरान १४२ केन्द्र वर्गों में २,५०६ से अधिक लोग सहभागी हुए।

योग वर्ग : यह दैनिक और सबसे लोकप्रिय वर्ग है तथा आम जनता के लिए विवेकानन्द केन्द्र से जुड़ने के सर्वोत्तम स्रोतों में से एक है। एक से डेढ़ घंटे के इस सत्र में योगाभ्यास और इंटरैक्टिव सत्र होते हैं। गत वर्ष ५३२ योग वर्गों में ७,५२९ से अधिक लोग सहभागी हुए।

संस्कार वर्ग : जीवन-मूल्यों की नींव पर आधारित बच्चों के वास्तविक व्यक्तित्व विकास हेतु चलनेवाला यह एक साप्ताहिक वर्ग है। संस्कार वर्ग का आयोजन अधिकतर मैदानों में होता है। इसमें कहानियों, खेलों और गीतों के माध्यम से बच्चे जुड़ते हैं। संस्कार वर्ग के माध्यम से उनमें मानवता, अनुशासन, देशभक्ति, धार्मिक मूल्यों आदि गुणों का सिंचन किया जाता है। वर्ष २०२२-२३ के दौरान,

पूरे भारत में ७६१ संस्कार वर्गों में १५,९१६ विद्यार्थियों ने भाग लिया।

स्वाध्याय वर्ग : समसामयिक एवं महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर बौद्धिक चर्चा की यह साप्ताहिक गतिविधि है। सामान्यतः इसमें महाविद्यालयों में अध्ययनरत युवा प्रतिभागी शामिल होते हैं। पिछले वर्ष पूरे भारत में १४२ स्वाध्याय वर्गों में १,९०१ लोग सहभागी हुए।

उत्सव

गुरु पूर्णिमा
- कार्यक्रमों की संख्या : ७४२
- उपस्थित लोगों की संख्या : ४०,४७१

विश्व बंधुत्व दिवस
- कार्यक्रमों की संख्या : ७३२
- उपस्थित लोगों की संख्या : ५५,६९७

साधना दिवस
- कार्यक्रमों की संख्या : ४१९
- उपस्थित लोगों की संख्या : ३३,८३४

गीता जयन्ती
- कार्यक्रमों की संख्या : ३७९
- उपस्थित लोगों की संख्या : ३०,३२१

समर्थ भारत पर्व
- कार्यक्रमों की संख्या : १,२७१
- उपस्थित लोगों की संख्या : १,३२,२६९

ओडिशा प्रान्त

स्वाध्याय प्रतियोगिता

स्कूल :

- सम्पर्कित स्कूल : १,१३०
- सहभागिता : १,३४७
- पंजीकृत छात्र : ३५,६८४
- प्रतिभागी छात्र : ३०,७२६
- कार्यशालाओं की संख्या : ८९
- कार्यशाला में उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या : ५,१०९

कॉलेज :

- सम्पर्कित महाविद्यालय : १,८३७
- सहभागिता : १,७३८
- पंजीकृत छात्र : ४७,५०७
- सहभागी युवा विद्यार्थी : ३५,२८०
- कार्यशालाओं की संख्या : २३९
- कार्यशाला में युवा विद्यार्थियों की संख्या : १०,६५९

कार्यशाला, उत्तर प्रदेश

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने विवेकानन्द शिला स्मारक का दर्शन किया।

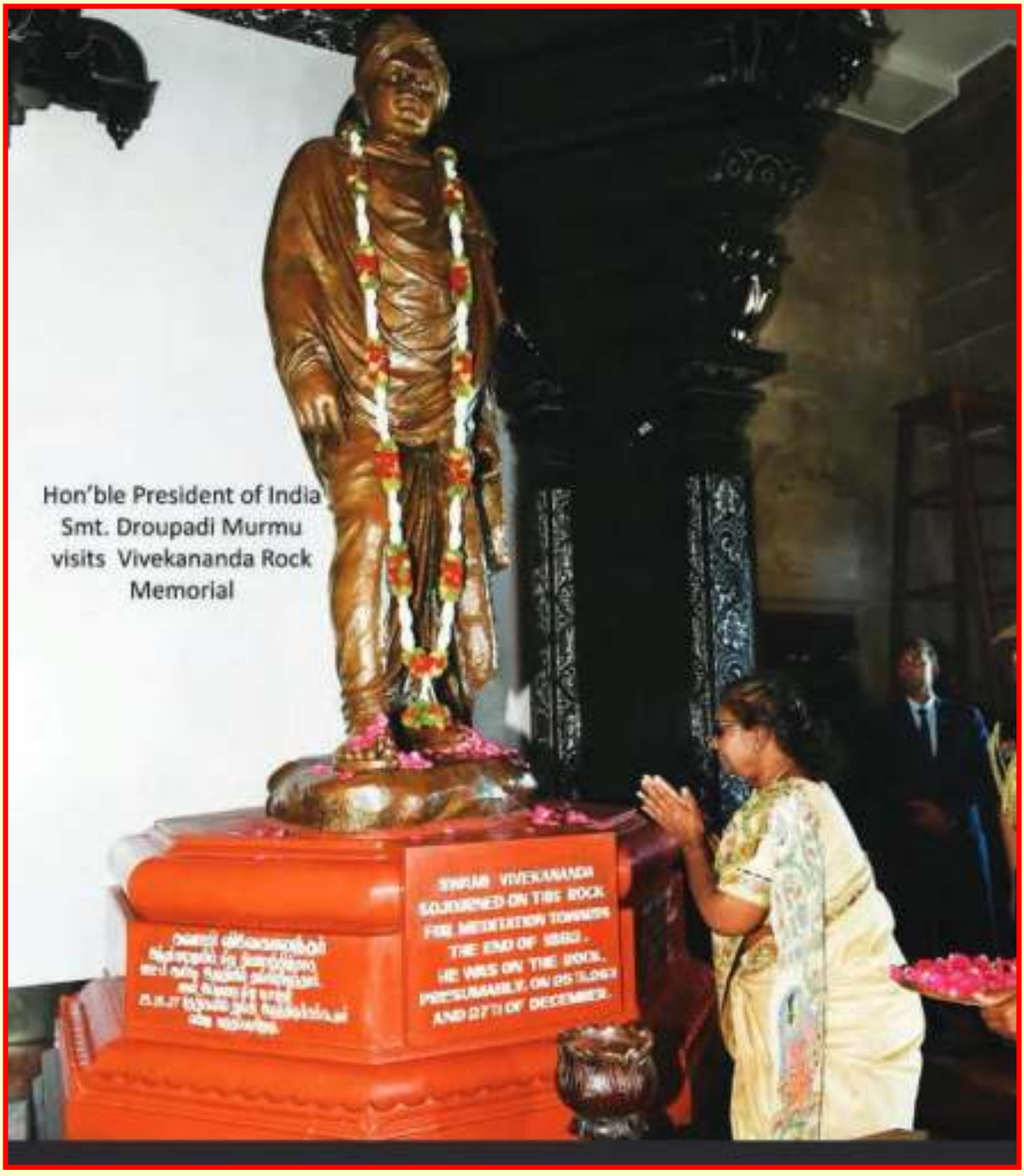

C-20 में विवेकानन्द केन्द्र

दिसम्बर, २०२२ से नवम्बर, २०२३ तक भारत के पास जी-20 की अध्यक्षता रहेगी।

विवेकानन्द केन्द्र इसके एक कार्यक्षेत्र – 'सिविल सोसायटी 20', संक्षेप में सी20 में संस्थागत भागीदार है।

भारत ने जी20 के लिए जो थीम **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** अथवा **'• एक पृथ्वी • एक परिवार • एक भविष्य'** रखी है, वह हमारी भूमिका को बहुत स्पष्ट करती है। केन्द्र ने – "वसुधैव कुटुम्बकम्" (मई, २०२३) और "विविधता, समावेश, पारस्परिक सम्मान" (जून, २०२३) विषयों पर दो अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किए। लगभग सभी राज्यों में विभिन्न संगठनों और संस्थानों को सम्मिलित करके विभिन्न चौपाल, समाजशालाएं आदि आयोजित की जा रही हैं।

अवधारणा पत्रक

विविधता, समावेश और पारस्परिक सम्मान

प्रकृति ने हर प्राणी को एक अनूठी, लेकिन बहुआयामी पहचान प्रदान की है। यह विशिष्टता ऊर्जा के विविधता युक्त सतत रूपान्तरण की अनुमति देती है। इसलिए, विविधता प्रकृति प्रदत्त है, चाहे वह पौधों, प्राणियों, भौगोलिक विशेषताओं, सौर मण्डल, आकाशगंगाओं आदि के सम्बन्ध में हो। विविधता के बिना जीवन को बनाए रखना सम्भव नहीं है। विविधता अपरिहार्य है, अतः जब इसके अन्तर्निहित सम्बन्धों को समझा जाता है, तो यह संतुलन और सामंजस्य की ओर ले जाता है। प्राचीन भारतीय ज्ञान और कई अन्य सभ्यताओं में, यह हमेशा उस एक को देखने के लिए प्रतिपादित किया गया था जो सभी में प्रकट होता है। कहा जाता है – **"एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति"** - सत्य एक है, वह अनेक रूपों में प्रकट होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड देवत्व की अभिव्यक्ति है, और इसलिए, परस्पर जुड़ा हुआ है, परस्पर सम्बन्धित और अन्योन्याश्रित है। इस अन्तर्संबम्ध, अन्तर-सम्बंधितता और अस्तित्व की अन्योन्याश्रितता को विज्ञान (फ्रिटजॉफ कैप्रा लिखित टर्निंग प्वाइन्ट), पारिस्थितिकी और कोशिकीय जीव विज्ञान (लिप्टन एच ब्रूस लिखित बायोलॉजी ऑफ बिलीफ) में तेजी से अनुभव किया जाता रहा है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को **"अमृतस्यपुत्र"** - ईश्वर की अभिव्यक्ति के रूप में

अभिव्यक्त करता है। प्रत्येक मनुष्य मूलतः अच्छा है और अनतर्निहित ज्ञान के साथ जन्म लेता है जिसे आज के शैक्षिक दर्शन (मोनटेसरी शिक्षा दर्शन) में स्वीकार किया जाता है। चाहे वह विधि (कानूनों) और विनियमों के माध्यम से हो या सामाजिक प्रथाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के, सभी अनुशासन और ढालने का मूल ध्येय, एक व्यक्ति में अन्तर्निहित इस आवश्यक अच्छाई को, ज्ञान को बाहर लाना है। इसका उद्देश्य उन सम्बन्धों को मजबूत करना भी है जो एक मनुष्य का अपने परिवार, क्षेत्र, समुदाय, समाज, संस्कृति और प्रकृति से होता है क्योंकि पूरा ब्रह्माण्ड आपस में जुड़ा हुआ है, एक दूसरे से सम्बन्धित है और अन्योन्याश्रित है (फ्रिटजॉफ कैपरा लिखित वेब ऑफ लाइफ)। प्रकृति विविध सम्बन्धों के माध्यम से अपनी रचना के पोषण और संरक्षण का विचार रखती है, अतः उन्हें केवल सतही 'स्टैन्ड अलोन' दृष्टिकोण तक सीमित नहीं किया जा सकता, क्योंकि सभी भाग पूर्णतः एकीकृत है।

इस प्रकार, मानव मन की जटिलताओं, आवश्यकताओं और विशिष्टता को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न समाजों में जीवन की विभिन्न प्रणालियों के माध्यम से विविधता का विस्तार और अभिव्यक्त किया जाता है। यह शरीर की जैविक सीमाओं से परे है, उदाहरणतः आस्था की विविधता, धर्मों और जीवन जीने के तरीके, परम्पराएं, ज्ञान प्रणालियां, विचारधाराएं, दर्शन, भाषाएं, रंग, लिंग, व्यवहार, विचारों, अवधारणाओं, जटिल विषयों को हल करने के तरीकों की विविधता, सभ्यतागत मूल्यों के समावेश के लिए आर्थिक आदेश और पद्धति बनाना आदि। विविधता केवल समकालीन समय में निर्मित स्थिरता का सिद्धान्त नहीं है, बल्कि प्रकृति और मनुष्य के अस्तित्व का परम सत्य है। दुनिया में मानव सभ्यता और इसकी स्थिरता अस्तित्व की एकता के आधार पर इस विविधता को समझने और स्वीकार करने पर निर्भर करती है, और इसलिए पारस्परिक रूप से अपने सभ्यतागत मूल्यों को जीने, व्यक्त करने और अभ्यास करने के प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार का सम्मान करती है। जब तक अस्तित्व की एकता को आत्मसात नहीं किया जाता, तब तक पारस्परिक सम्मान के साथ विविधता की स्वीकृति सम्भव नहीं है।

राजनीतिक शक्ति के अति केन्द्रीकरण के कारण, दुर्भाग्य से, विविधता को एक लचीले समरूप अस्तित्व के लिए बाधा के रूप में देखा गया है। इसलिए, सर्वोच्चता और व्यक्तिवाद की भावना से प्रेरित एकरूपता की खोज में कृत्रिम, बाहरी नियमों को अपनाने की प्रवृत्ति बन गई। दुनिया पिछली शताब्दियों में उन लोगों द्वारा बड़े पैमाने पर औपनिवेशीकरण का शिकार रही है, जो सत्य और सांस्कृतिक रूढ़िवाद के एकान्तिक दावों के साथ नस्लीय वर्चस्व के विचारों से प्रेरित थे। अति-केन्द्रीकरण और विचारों, आस्थाओं के संघर्ष के दौर ने समय के साथ कई परम्पराओं, भाषाओं को नष्ट कर दिया, और लोगों की विभिन्न पहचानों (पंथ, रंग, लिंग या विश्वास) को नकारा। इसने मानव जीवन और मानव सभ्यता दोनों को कमजोर किया है।

जिस प्रकार जैव-विविधता प्रकृति को समृद्ध, संतुलित और संरक्षित करती है, उसी प्रकार परम्पराओं, भाषाओं, परमात्मा के आह्वान के तरीकों, आन्तरिक अस्तित्व को गहरा करने के तरीकों की विविधता मानव जीवन को समृद्ध करती है तथा इसे और विकसित करने में मदद करती है। विविधता को मिटाने या जीवन की कृत्रिमता और गैर-टिकाऊ विकास से मतभेद रखनेवाले लोगों की उपेक्षा करने के जबरदस्त प्रयास शुरू हैं। एकरूपता की चाह में कुछ लोग दमन और विभिन्न तरीकों से मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हैं तथा मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच के सम्बन्धों को प्रभावित करनेवाली गहरी विकृतियों का कारण बनते हैं। 'विकास' की प्रक्रिया और संसार को एक समान बनाने की हड़बड़ी में दूसरों पर अपनी समझ थोपने की अपरिपक्वता ने कई समुदायों को पीछे छोड़ दिया है। कुछ का शोषण किया गया और उनका

उपहास उड़ाया गया, साथ ही पर्यावरण को भी बर्बाद किया गया।

कई लोग तर्क देते हैं कि संघर्ष-मुक्त मानव समाज के लिए प्रणालियों, परम्पराओं, धर्म, विकास के तरीकों की एकरूपता सम्बन्धी कुछ आदेश आवश्यक है। और उस एकरूपता को एक कृत्रिम नियमन द्वारा लाया जाना चाहिए, यहाँ तक कि थोपने और विशिष्टता के माध्यम से भी। किन्तु इतिहास हमें बताता है कि यह सच नहीं है, यह अक्सर संघर्ष की ओर ले जाता है, और सम्मान के साथ जीने के अधिकार से वंचित करता है।

इसलिए आज सरकारी स्तर पर विभिन्न रियायतों और कानूनी सहायता के माध्यम से उपेक्षित लोगों को जगह देने और पीछे रह गए लोगों की सहायता करने के विचार से विविधता, निष्पक्षता और समावेशन पर बहुत आवश्यक जोर राजनीतिक रूप से आवश्यक है। लेकिन इस अवधि में, इस दृष्टिकोण ने विविधता और समावेशन को लैंगिक अभिविन्यास तक या पिछड़े समुदायों के लिए कुछ आर्थिक लाभों तक सीमित कर दिया है। चुनावी प्रक्रिया के अति-व्यावसायीकरण और राजनीतिकरण ने बहिष्कार और शत्रुता की वृद्धि की है। अपनी परम्पराओं का पालन करने का अधिकार, परिवार, समुदाय और पर्यावरण के हिस्से के रूप में जीने का अधिकार और न केवल व्यक्तियों के रूप में रहने का अधिकार, बल्कि समुदायों के अपने सांस्कृतिक लोकाचार के अनुसार तरीकों को अपनाने के अधिकार जैसे कई व्यक्तियों के अधिकारों को जबरदस्ती समाप्त कर दिया जाता है।

सभी के अधिकारों को ध्यान में रखने के लिए, एक अधिक आन्तरिक, गहन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। खुले मन से एकता की समझ की आवश्यकता है। संक्षेप में, परस्पर सम्मान की आवश्यकता है। सम्मान के साथ जीने का अधिकार, सुने जाने का अधिकार, अपनी परम्पराओं का पालन करने का अधिकार और अपने विश्वासों का पालन करने का अधिकार, अपने उत्थान और अधिकार के लिए सभी अवसरों तक पहुँच का अधिकार सहित विकास-प्रक्रिया का हिस्सा बनने के लिए, सभी विविध संस्थाओं के लिए जीवन के अधिकार को स्वीकार करना और सम्मान करना अनिवार्य है। यह सुनिश्चित करना सम्बन्धित सरकारों और विभिन्न शक्ति केन्द्रों की जिम्मेदारी है कि उपरोक्त अधिकार निर्विवाद बने रहें।
पिछले कुछ वर्षों से, C20 ने इस एजेंडे को व्यक्तिगत स्तर पर G20 की सरकारों तक ले जाने के लिए अचूक रूप से काम किया है। लेकिन आवश्यकता एक राष्ट्र में सामाजिक स्तर पर विविधता और समावेशन को पहचानने की भी है, और अन्तर्राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर विविध मार्गों और दृष्टिकोणों के समावेश की भी है। इस प्रकार, 'विविधता, समानता, समावेश' विषय पर और अधिक गहन चर्चा और इसके अनुप्रयोग को बढ़ाने के लिए जो प्रारम्भिक विचार था, उस पर चर्चा और बहस करने की आवश्यकता है। यदि समावेशन को प्रभावी बनाना है तो उसमें सहभागिता निहित है, इसलिए चुना गया विषय विविधता, समावेश, परस्पर सम्मान है।

"विविधता, समावेशन और परस्पर सम्मान" का सी-20 कार्यकारी समूह, संसार की इस विशिष्टता को बनाए रखने के लिए काम कर रहे हितधारकों, संगठनों, व्यक्तियों, नागरिक समाजों का एक मंच होगा। साथ ही भारत के दूरस्थ भागों में रह रहे और संसार के अन्य पारम्परिक समुदायों को स्वर देने का काम करेगा, जो अपने पर्यावरण, भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप अद्वितीय तंत्र के साथ सतत विकास हेतु प्रयत्नशील हैं।

सी20 समूह निम्नलिखित मुद्दों को हल करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों को स्वीकार करने, सम्मान करने, अपनाने और सिफारिश करने की आवश्यकता पर आगे शोध और व्याख्या करेगा।

१. विविधता और उन लोगों का समावेश जो दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में पैदा हुए हैं या विकास की प्रक्रिया में पीछे रह गए हैं। इसमें शारीरिक और मानसिक

अक्षमतावाले लोग, या जन्म से मध्यलिंगी व्यक्ति, आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्ति आदि शामिल होंगे।

२. जो व्यक्ति स्त्री और पुरुष दोनों नहीं हैं या जो ट्रांसजेन्डर आदि हैं, उन्हें समाज में सम्मान के साथ जीने की जरूरत है। तदनुसार, यह मुद्दा अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यधारा के संवाद का हिस्सा है और कई उपायों को अपनाया जा रहा है। लेकिन अनुचित व्यावसायीकरण भी है जो अपने शरीर को बदलने के लिए अपरिवर्तनीय सर्जरी से गुजरनेवाले बच्चों के साथ चरम पर जा रहा है। इस मुद्दे पर चर्चा करने की आवश्यकता है, ताकि स्वस्थ वातावरण के विकास के लिए बच्चों के अधिकारों की रक्षा की जा सके।

३. समुदायों की आस्था और सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति परस्पर सम्मान की आवश्यकता है, जिन्हें दुर्भाग्य से, अब तक पिछड़ा, पुरातन और इससे भी बदतर मिथ्या और बुराई के रूप में उपहासित किया जाता था। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र ने भी इस विश्व-दृष्टिकोण को मुख्य रूप से साझा किया है।

इन नए दृष्टिकोणों को, सतत विकास के निर्माण के लिए संस्कृति की भूमिका को जीवन-मूल्यों की पद्धति तथा एक संसाधन और ढांचे के रूप में पूरी तरह से स्वीकार करना चाहिए; साथ ही, हम संस्कृति की समझ को अंगीकार करते हैं जो अधिकार-आधारित दृष्टिकोण और विविधता के सम्मान के लिए खुला, विकसित और दृढ़ता से तैयार है, जिसके लिए व्यक्तियों को "जीने और वह बनने के लिए जो वे बनना चाहते हैं" सक्षम बनाएं, इस प्रकार आपसी समझ और आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हुए, लोगों के अवसर और मानवीय क्षमताएं बढ़ाएं। लेकिन जो आवश्यक है वह न केवल सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका को स्वीकार करना है बल्कि पारम्परिक समुदायों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना और उनकी रक्षा करना भी है। या दूसरे शब्दों में जनजाति (आदिवासी) और अन्य वंचित समुदायों की सांस्कृतिक आस्था और परम्पराओं की रक्षा करना।

४. विश्व भर में देशी परम्पराओं का सम्मान करना और उनकी स्वीकार्यता में भी विविधता, समानता और समावेश के सिद्धान्तों को लागू करना।

५. विभिन्न देशों, संस्कृतियों और समुदायों द्वारा अपनी समस्याओं को हल करने के लिए अपनाए गए तरीकों का सम्मान करना और उनकी परम्पराओं के आलोक में मानवाधिकार आदि शब्दों की व्याख्या करना। आज, मानवाधिकारों पर विमर्श झुका हुआ है और इस प्रकार, गरिमा के अधिकार और पीड़ितों के जीवन के अधिकार से अधिक महत्त्व आतंकवादियों या बलात्कारियों के अधिकार को दिया जाता है। पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता है। प्रत्येक देश का अपनी सांस्कृतिक परम्परा के आधार पर मानवाधिकारों के मुद्दे से निपटने का अपना तरीका होता है। मानवाधिकार नियमों का एक समान अनुप्रयोग (या बल्कि नुस्खा) नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए, वर्तमान में मानव अधिकार का मुद्दा मनुष्य को केवल एक व्यक्ति के रूप में देखता है और उसके परिवार, समाज, प्रकृति आदि के प्रति उसके सम्बन्ध और जिम्मेदारी को ध्यान में नहीं रखता है। कई गैर-पश्चिमी समाज आज भी सम्बन्ध-आधारित हैं और वह अनुबंध-आधारित नहीं हैं। इस प्रकार, विभिन्न सभ्यताओं द्वारा मानवाधिकारों के मुद्दों से निपटने के विभिन्न तरीकों के प्रति सम्मान होना चाहिए। २००५ में पहली बार G20 के नेताओं द्वारा विकास के लिए विविध दृष्टिकोण को मान्यता दी गई थी।

C20 समूह विभिन्न मुद्दों को हल करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों को स्वीकार करने, उनका सम्मान करने, अपनाने और अनुशंसा करने की आवश्यकता का पता लगाएगा और उसका प्रतिपादन करेगा। सभी चुनौतियों से निपटने के लिए एक ही प्रकार का मॉडल उपयुक्त नहीं हो सकता। दुनियाभर के हितधारकों को एक साथ लाकर, स्थानीय आवश्यकताओं, संस्कृति और संसाधनों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, कार्य समूह लचीलेपन और नवाचार को बढ़ावा दे सकता है।

विवेकानन्द केन्द्र की परियोजनाओं (प्रकल्पों) का अवलोकन

इन परियोजनाओं को उनके प्रमुख क्षेत्रों के अनुसार, पाँच शीर्षकों के अन्तर्गत समूहीकृत किया गया है। ये हैं :- स्वास्थ्य सेवा, ग्रामीण विकास, भारतीय संस्कृति, प्रकाशन और शिक्षा।

स्वास्थ्य सेवा

देशभर में व्यापक रूप से विस्तारित स्वास्थ्य सेवा ३०८ गांवों में २,६०,४६६ लोगों को लाभान्वित कर रही है।
इस गतिविधि में २९७ से अधिक कार्यकर्ता सक्रिय रूप से सहभागी हैं।

विवेकानन्द केन्द्र – बी.ओ.आर.एल. अस्पताल, बीना, मध्य प्रदेश (स्थापना-२००८)

विवेकानन्द केन्द्र - एन.आर.एल., असम

विवेकानन्द केन्द्र अस्पताल, पारादीप, ओडिशा (स्थापना २०१२)

वि.के.-एन.आर.एल. द्वारा मोबाइल मेडिकल कैम्प, नुमालीगढ़, असम

चिकित्सा शिविर, सम्बलपुर, ओडिशा

स्वास्थ्य सेवा, वि.के. अरुण ज्योति, अरुणाचल प्रदेश

देशभर में व्यापक रूप से विस्तारित स्वास्थ्य सेवा ३०८ गांवों में २,६०,४६६ लोगों को लाभान्वित कर रही है। इस गतिविधि में २९७ से अधिक कार्यकर्ता सक्रिय रूप से सहभागी हैं।

विवेकानन्द केन्द्र अपने स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प के अन्तर्गत समाज को स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाएं देने के लिए अस्पताल, ओपीडी क्लीनिक और अन्य सहायक कार्यक्रम चलाता है। वर्तमान में, ३ अस्पताल, २ ओपीडी क्लीनिक और ५ कार्यक्रम विवेकानन्द केन्द्र की परियोजनाओं के अन्तर्गत हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा प्रदान करनेवाले अस्पतालों, ओपीडी क्लीनिकों और विवेकानन्द केन्द्र से जुड़े कार्यक्रमों की सूची निम्नलिखित हैं :-

अस्पताल

१. वि.के.-एन.आर.एल.एच., नुमालीगढ़, असम
२. वि.के.-बी.आर.एच., बीना, मध्य प्रान्त
३. वि.के.-पी.आर.एम.एस., पारादीप, ओडिशा

ओपीडी क्लीनिक :

१. स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, तिनसुकिया, असम
२. विवेकानन्द मेसोनिक डिस्पेन्सरी, विवेकानन्दपुरम, कन्याकुमारी

कार्यक्रम :

१. अरुण ज्योति प्रकल्प, अरुणाचल प्रदेश
२. वि.के. ग्रामीण विकास कार्यक्रम, तुतुकुडी, कन्याकुमारी
३. वि.के. प्रशिक्षण एवं सेवा प्रकल्प, पिम्पलद, नासिक
४. विवेकानन्द केन्द्र ओडिशा सेवा प्रकल्प
५. विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी, शाखा कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

इन प्रकल्पों के माध्यम से सेवा प्राप्त गांवों की कुल संख्या ३०८ है, जिसमें कुल लाभार्थियों की संख्या २,६०,४६६ है। इसके अतिरिक्त, इन प्रकल्पों में सक्रियता से २९७ कार्यकर्ता समर्पित भाव से कार्यरत हैं।

ग्रामीण विकास

"ग्राम विकास प्रकल्प" का कार्य देश के ५ राज्यों, यथा - तमिलनाडु, महाराष्ट्र, ओडिशा, असम और अरुणाचल प्रदेश में गतिमान है। इस सेवा प्रकल्प में ३८६ गांव और २२ जनजातियाँ शामिल हैं। कुल ४१५ कार्यकर्ताओं में ८ जीवनव्रती, ३ वानप्रस्थी, ७ सेवाव्रती, ५८ स्थानिक कार्यकर्ता, १६८ कर्मचारी और १७१ सहायक कर्मचारी कार्यरत हैं।

इस प्रकल्प के अन्तर्गत शैक्षिक गतिविधियाँ – बालवाड़ी, विद्यार्थियों के लिए छात्रावास और कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं। इसके संस्कृति मंच के अन्तर्गत महिलाओं के लिए दीप पूजा और बच्चों के लिए संस्कार वर्ग का आयोजन किया जाता है।

युवाओं के लिए – युवा प्रेरणा शिविर, कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर, स्वाध्याय वर्ग, योग सत्र, व्यक्तित्व विकास शिविर, अरुण ज्योति चमू निर्माण शिविर और परशुराम कुण्ड मेला का आयोजन किया जाता है। विवेकानन्द केन्द्र के सभी पांच उत्सव - स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, गुरु पूर्णिमा, विश्व बन्धुत्व दिवस, साधना दिवस और गीता जयन्ती आयोजित किये जाते हैं।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

२०२२-२३ में, स्थानीय लोगों की अच्छी भागीदारी के साथ आम्बेडकर जयन्ती, बिरसा मुंडा जयन्ती, पारम्परिक नृत्य और नाट्य प्रतियोगिता, रक्षा बंधन, ग्रीटिंग्स कार्ड वितरण, गणेश मूर्ति निर्मिती और पतंग निर्मिती जैसे कई स्थानिक उत्सव भी आयोजित किए गए।

"यदि भारत जागेगा, तो समूचा संसार जागेगा। जागो!" - स्वामी विवेकानन्द

वि.के.-एन.ए.आर.डी.ई.पी.
(विवेकानन्द केन्द्र - प्राकृतिक संसाधन विकास परियोजना, कन्याकुमारी)

वि.के.-एन.ए.आर.डी.ई.पी. पारम्परिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान को जोड़ता है तथा आधुनिक जीवन की समस्याओं के लिए लाभदायी समग्र समाधान का विकल्प प्रदान करता है - विशेष रूप से ग्रामीण समुदायों के लिए। यह लाभदायक प्रभावी-निर्माण, समग्र स्वास्थ्य, नवीकरणीय ऊर्जा, टिकाऊ कृषि, जल प्रबंधन और आन्तरिक स्थिरता के क्षेत्र में काम करता है। और ये सभी विविध क्षेत्र सतत विकास की अवधारणा की इसकी केन्द्रीय धुरी से जुड़े हुए हैं।

- जल निकायों का पुनरुद्धार और नवीकर – संख्या ६
- टैरेस गार्डन पर प्रशिक्षण- संख्या ३
- एज़ोला प्रौद्योगिकी विषयक प्रशिक्षण – संख्या ९
- वर्मी वॉश एवं कॉम्पैक्ट तकनीक विषयक प्रशिक्षण- संख्या ५९
- ग्रीन हेल्थ होम- १४३३ रोगी लाभान्वित

- वर्मा मसाज, वर्मा प्वाइन्ट उपचार – ६२२ रोगी लाभान्वित
- 'सिद्ध वर्मा अस्थि स्थापना' पर कार्यशाला – ४ कार्यक्रम, ११९ रोगी
- "जड़ी-बूटियों के पारम्परिक और वैज्ञानिक ज्ञान" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी – ५४ संख्याएँ
- "शक्ति सुरभि बायो-मेटनेशन प्लान्ट" पर प्रशिक्षण- ९ कार्यक्रम, १२१ प्रतिभागी
- 'रसोई अपशिष्ट आधारित बायो-मिथेनेशन प्लान्ट' विषयक जागरूकता- १५,४६१ प्रतिभागी
- शक्ति सुरभि संयंत्रों की स्थापना – १४९ संयंत्र स्थापित।
- 'टिकाऊ विकास' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम – १६
- 'सांस्कृतिक नेतृत्व कार्यक्रम' – २७ प्रतिभागी
- कृषि प्रौद्योगिकियों के लिए ए.टी.एम.ए. प्रशिक्षण – ५ कार्यक्रम, १६० प्रतिभागी
- रामेश्वरम स्वयंसेवकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (रिफ्रेशर कोर्स) – संख्या ४७
- संकाय विकास कार्यक्रम – संख्या २५
- शैक्षणिक सहल – ८ कार्यक्रम, संख्या ४८१

भारतीय संस्कृति

विवेकानन्द केन्द्र के पांच संस्थान भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में सेवा दे रहे हैं – वि.के.-ए.आई.सी.वाई.ए.एम. (भारतीय संस्कृति, योग और प्रबंधन अकादमी) भुवनेश्वर, वि.के.आई.सी. (विवेकानन्द केन्द्र संस्कृति संस्थान) गुवाहाटी, वि.आई.एफ. (विवेकानन्द इन्टरनेशनल फाउंडेशन) नई दिल्ली, वि.के.- वी.वी.एफ. (विवेकानन्द केन्द्र-वैदिक विजन फाउंडेशन), कुडुंगल्लूर और वि.के.-वयम (विवेकानन्द केन्द्र – वेदान्तिक अप्लीकेशन इन योगा एंड मैनेजमेन्ट) सोलापुर।

इन संस्थानों में भारतीय संस्कृति के सार को व्यवस्थित तरीके से प्रचारित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं – अर्थात् जीवन-दर्शन, जीवन-मूल्य और जीवन-व्यवस्था।

वि.के.-वि.वि.एफ.
(विवेकानन्द केन्द्र-वैदिक विजन फाउंडेशन), कुडुंगल्लूर

संगोष्ठी

• २९ सितम्बर, २०२२ - 'दैनिक जीवन में धर्म' विषय पर गणमान्य व्यक्तियों की वार्ता
• २१ जून, २०२२ - स्वामी तेजस्वरूपानन्दजी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सम्बोधन
• १ अक्टूबर, २०२२ - स्वामी उदित चैतन्यजी द्वारा 'अमृत परिवार' पर वक्तृता

• प्रकाशित पुस्तकें : भगवद् गीतायिले अमृता कुटुम्बा संकल्पम (मलयालम) • जीवितम् ओरु आध्यात्मिक साधना (मलयालम)

वि.के.-ए.आई.सी.वाई.ए.एम.
(भारतीय संस्कृति, योग और प्रबंधन अकादमी), भुवनेश्वर

सेमिनार

•१४ जनवरी, २०२३ - योग शास्त्र पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
•पेपर प्रस्तुति – २६ ; प्रतिभागी – ५४
•१५ जनवरी, २०२३ - भारतीय शास्त्रों पर आधारित भारतीय प्रबंधन विषयक सम्मेलन
•सम-सामयिक प्रबंधन में नेतृत्व की चुनौतियों पर उद्बोधन
•नैतिक संघर्ष प्रबंधन, एक नेता की दुविधा – द्वारा डॉ. अशोक महापात्रा
•संगठन में आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश – द्वारा मा. निवेदिता भिडे
• विभिन्न व्यावसायिक, कॉर्पोरेट और शैक्षणिक क्षेत्र के ६७ नागरिक सहभागी हुए।
• १९ नवम्बर, २०२२ – पारम्परिक समुदायों के आई.पी. अधिकारों के दोहन पर चर्चा – द्वारा डॉ. संतोष मोहंती, टी.सी.एस. के पूर्व उपाध्यक्ष और आई.पी.आर. वैश्विक प्रमुख।

• ११ और १२ जनवरी, २०२३ - जनजाति समुदाय में लोककथाओं के महत्त्व पर संगोष्ठी। इस कार्यक्रम में १२ विभिन्न समुदायों से १०१ प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

प्रकाशन

ओडिशा में आनंदालय विषयक दृश्य-श्रव्य माध्यम जनवरी, २०२३ में बनाया गया और इसे जारी किया गया। १२ जनवरी, २०२३ - संस्कृति संरक्षण के लिए सावरा समुदाय की ओर से श्री दम्बुरु मंडल को दूसरा ऐक्यम सम्मान प्रदान किया गया।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

वि.के.आई.सी. (विवेकानन्द केन्द्र संस्कृति संस्थान), गुवाहाटी

२९, ३० अप्रैल और ०१ मई, २०२२ - तेजस्वी भारत-वि.के.आई.सी. के २५ वर्ष

वि.के.आई.सी. सम्मान : माननीय राज्यपाल प्रो. जे. मुखीजी द्वारा मेघालय के श्री रोथेल खोंगसित और सिक्किम के श्री नामग्याल लेप्चा को वि.के.आई.सी. सम्मान।

पूज्य गोविन्द देव गिरीजी महाराज के ६ प्रवचन : गुवाहाटी विश्वविद्यालय के छात्र, वि.के. कार्यकर्ता और गुवाहाटी के नागरिकों के लिए।

जी.यू. के साथ संस्कृति अन्वेषक श्रृंखला : 'सह-अस्तित्व, सद्भाव और प्रगति के लिए शासन - एनईआई की परम्पराएं और संस्थाएं''

१४ नवम्बर, २२ : श्री जिष्णु बरुआ, आईएएस की उपस्थिति में कार्यक्रम

२० दिसम्बर, २२ : पूर्वोत्तर भारत पर ध्यान केन्द्रित करते हुए सुशासन के सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति का अभिनव पुनरुद्धार - पहला सत्र

संगोष्ठी एवं क्षेत्र का दौरा : देवरी समुदाय की पारम्परिक प्रणालियाँ : मार्च में देवरी साहित्य सभा के साथ परिवर्तन और सातत्य। १६ में से १० शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

नामघर की पारम्परिक प्रणाली - एक केस स्टडी - छात्रों द्वारा फील्ड वर्क का पहला चरण पूरा – ४७ नामघरों का समावेश; चरण दो – फील्ड अन्वेषक द्वारा मार्च और अप्रैल, २०२३ के दौरान नामघरों का अध्ययन।

आरए के क्षेत्र प्रवास : २- ४ जून, २०२२ : क्रमांक २ बोईखुवा मिसिंग गांव, मोरी धनसिरी पंचायत, गोलाघाट जिला;

१५ दिसम्बर, २०२२ से ९ जनवरी, २०२३ : टैगिन समुदाय की पारम्परिक गणना प्रणालियों का दस्तावेजीकरण - विभिन्न क्षेत्रों को समावेश - पापुम पारे, निचला और ऊपरी सुबनसिरी जिला;

१६ से २४ जनवरी, २०२३ : मोरीगोअन जिले के तिवा समुदाय के जैन्तिया, कार्बी, खासी और अन्य समुदायों के साथ सामाजिक सम्बन्ध, जून बील मेला, एक पारम्परिक वस्तु विनिमय प्रणाली प्रथा पर केन्द्रित पद्धति का अभ्यास है।

मणिपुर और अरुणाचल प्रदेश में वि.के.आई.सी. के अनेक अध्याय हैं।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

"संसार के सभी मतभेद केवल दृष्टिकोण का ही है, दूसरा और कोई नहीं, क्योंकि सभी के मूल में एक ही तत्व विद्यमान है।" - स्वामी विवेकानन्द

वि.आई.एफ. (विवेकानन्द इन्टरनेशनल फाउंडेशन) नई दिल्ली

विमर्श

- २१ जून, २०२२ : यूक्रेन संकट की पृष्ठभूमि पर चीन की चुनौती – द्वारा राजदूत अशोक के कांथा, आईएफएस (सेवानिवृत्त)
- २८ जुलाई, २०२२ : खाद्य और पोषण सुरक्षा- राष्ट्रीय सुरक्षा की कुंजी - द्वारा श्री बिशो पराजुली
- ७ सितम्बर, २०२२ : भारतीय रणनीति के तकनीकी पहलू- द्वारा श्री श्रीधर वेम्बू, संस्थापक और सीईओ, ज़ोहो कॉर्प।
- ३१ जनवरी, २०२३ : गीता फॉर मिलेनिया – द्वारा स्वामी मित्रानन्द।
- ३१ जनवरी, २०२३ : सिंधु सभ्यता पर वर्तमान शोध के साथ ही प्राचीन अतीत विषयक १० वां व्याख्यान सम्पन्न।

सेमिनार/सम्मेलन

- २९ नवम्बर, २०२२ : २०२२ में भारत में पुरातत्व की स्थिति
- ०१-०२ सितम्बर, २०२२ : विआईएफ और फिक्की के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन, विषय : भारत को एक वैश्विक ड्रोन हब बनाना।

पुस्तक विमोचन एवं चर्चाएं :

- २२ सितम्बर, २०२२ - गंगा में सांप : ब्रेकिंग इंडिया २.०
- १० अक्टूबर, २०२२ - प्राचीन भारतीय इतिहास में राष्ट्रवाद का अध्ययन (सिंधु सभ्यता पर वर्तमान शोध सहित) विषय पर चर्चा।
-

Interaction with Gen-Next Democracy Network Programme | July 22

वि.के.-वयम

(विवेकानन्द केन्द्र- वेदान्तिक अप्लीकेशन फॉर योग एण्ड मैनेजमेन्ट), सोलापुर

विके-वयम में कार्यक्रम :

योग विमर्श :

- २८ मई, २०२२ को सूर्यनमस्कार।
- २८ अगस्त, २०२२ को नारद भक्ति सूत्र।
- १ जनवरी, २०२३ को कर्मयोग।
- स्वानंद – ५ और ६ नवम्बर, २०२२ नौकरशाहों/उद्योजकों के लिए योग प्रतिमान।
- १० से १२ सितम्बर, २०२२ को मातृत्व योग।
- १६ जुलाई, २०२२ को समर्थ शिक्षक योग प्रतिमान।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

"यदि आप भगवान को प्राप्त करना चाहते हैं, तो मनुष्य की सेवा करें।"
- स्वामी विवेकानन्द

प्रकाशन

विवेकानन्द केन्द्र एक वैचारिक आन्दोलन है और शब्द विचारों के पंख हैं। इस आंदोलन के जन्म और विकास में पुस्तकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एकनाथजी ने सन १९६३ में स्वामी विवेकानन्द के महत्त्वपूर्ण विचारों पर "स्वामी विवेकानन्दाज राउजिंग कॉल टू दी हिन्दू नेशन" नामक पुस्तक प्रकाशित की थी और यही इस आन्दोलन की शुरुआत का एक कारण था। विवेकानन्द शिला स्मारक के उद्घाटन पर एक ऐतिहासिक खंड "इंडियाज कॉन्ट्रिब्यूशन टू दी वर्ल्ड थॉट एण्ड कल्चर" को साकार किया गया। हाल ही में इसकी एक प्रति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को उपहार स्वरूप भेंट की गई।

Prakashan (Publication)

Languages in which Kendra Books are published	17
Centers through which Kendra Books are published	10
Languages - (Assomiya, Bodo, Dimasa, Karbi, Manipuri, Adi, Marathi, English, Tamil, Bengali, Hindi, Telugu, Gujarati, Punjabi, Kannada, Odiya, Malayalam)	17
Magazines – Yuva Bharati, Viveka Vani, Vivekananda Kendra Patrika, Vivek Sudha, Vivek Vichar, Vivek Jagriti, Quest, Kendra Bharati	8
Karyakartas(including staff) involved in Prakashans	97
People reached through our Magazines. (Subscriptions alone)	27,517
New Books published	12
Translated	25
Books reprinted in Hindi, English,Tamil,Kannada, Marathi, Assomiya, Telugu	47

केन्द्र का प्रकाशन प्रभावशाली ढंग से विकसित हुआ है और इसके माध्यम से १० प्रकाशन केन्द्रों से (चेन्नई, जोधपुर, गुवाहाटी, मैसूर, भुवनेश्वर, कोलकाता, हैदराबाद, वडोदरा, कोडुंगल्लूर, पुणे और सोलापुर) १७ भाषाओं में (हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, असमिया, बोडो, दिमासा, कार्बी, मणिपुरी, आदि, तमिल, बंगाली, तेलुगु, गुजराती, पंजाबी, कन्नड़, उड़िया, मलयालम) ६३५ से अधिक शीर्षक से साहित्य का प्रकाशन हुआ है। विवेकानन्द केन्द्र की ८ पत्रिकाएं हैं (केन्द्र भारती (हिन्दी), युवा भारती (अंग्रेजी), विवेका वाणी (तमिल), विवेकानन्द केन्द्र पत्रिका (अंग्रेजी), विवेक सुधा (गुजराती), विवेक विचार (मराठी), विवेक जागृति (असमिया) और क्वेस्ट) और उनके कुल ग्राहक २७,५१७ हैं)।

वर्ष २०२२-२३ की अवधि में ३७ नई पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें से १२ नए शीर्षक थे और २५ पुस्तकों का अनुवाद किया गया।

इसी अवधि में ६ भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, कन्नड़, मराठी, असमिया और तेलुगु) में कुल ४७ पुस्तकों का पुनर्मुद्रण हुआ।

राजस्थान में 'विवेकानन्द सन्देश यात्रा' हुई। इस यात्रा में राज्य के ३३ जिलों में ५० दिनों तक साहित्य रथ (अर्थात मोबाइल बुक वैन) के द्वारा सामान्य जनता तक केन्द्र के साहित्यों को पहुँचाया गया।

शिक्षा

विवेकानन्द केन्द्र ने सदैव शिक्षा को प्राथमिकता दी है, विशेषकर वहाँ, जहाँ औपचारिक शैक्षिक सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान में अपने शैक्षणिक प्रकल्पों के अन्तर्गत विवेकानन्द केन्द्र भारत के ५ राज्यों में ८० विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय (वि.के.वि.) चलाता है।

इसका विवरण इस प्रकार है :- तमिलनाडु – २ वि.के.वि., असम २५ वि.के.वि., अरुणाचल प्रदेश ४१ वि.के.वि., कर्नाटक १ वि.के.वि. और अंडमान और निकोबार द्वीप में ११ वि.के.वि.। छात्रों की कुल संख्या ३२,४३२ (छात्र १८,४८४ और छात्राएं १३,९४८) हैं। टीचिंग स्टाफ १,६६६ और नॉन टीचिंग स्टाफ की संख्या ६३१ है। इसके अलावा २ कॉलेज भी हैं - स्कूल ऑफ नर्सिंग और बी.एड टीचर ट्रेनिंग कॉलेज।

उपलब्धियाँ : विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों में अनुशासित और मूल्य आधारित शिक्षा और विकास को बढ़ावा देनेवाले अनुकूल वातावरण के कारण शिक्षक और छात्र राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी-अपनी श्रेणियों में असाधारण उपलब्धि प्राप्त करनेवाले रहे हैं।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

"शिक्षा उस पूर्णता की अभिव्यक्ति है जो पहले से ही मनुष्य में विद्यमान है।"
– स्वामी विवेकानन्द

वि.के.वि., तेजपुर

वि.के.वि., कन्याकुमारी

वि.के.वि., अंडमान

विवेकानन्द केन्द्र के कार्यों का प्रान्तशः अवलोकन

विवेकानन्द केन्द्र का राष्ट्रव्यापी कार्य भारत के सम्पूर्ण भूगोल को कवर करते हुए १५ प्रान्तों में संचालित है। ये प्रान्त हैं :- दक्षिण प्रान्त, महाराष्ट्र प्रान्त, गुजरात प्रान्त, राजस्थान प्रान्त, मध्य प्रान्त, हरियाणा प्रान्त, पंजाब प्रान्त, उत्तर प्रान्त, उत्तर प्रदेश प्रान्त, अरुणाचल प्रदेश, असम प्रान्त, पश्चिम बंग प्रान्त, बिहार प्रान्त, ओडिशा प्रान्त और तेलुगु प्रान्त।

दक्षिण प्रान्त

दक्षिण प्रान्त में तीन विभाग शामिल हैं - केरल विभाग, कर्नाटक विभाग और तमिलनाडु विभाग। तीनों विभागों पूरे वर्ष विभिन्न गतिविधियाँ और कार्यक्रम आयोजित किए गए। यहाँ प्रत्येक विभाग के कार्यों का विवरण प्रस्तुत है :-

केरल विभाग

- **गुरु पूर्णिमा :** गुरु के प्रति श्रद्धा अर्पित करने के लिए गुरु पूर्णिमा उत्सव में कुल २,५१८ लोग शामिल हुए।
- **विश्व बंधुत्व दिवस :** विश्व बंधुत्व और सद्भाव के महत्त्व का प्रचार करनेवाले इस उत्सव में १,१८० लोगों की उपस्थिति रही।
- **साधना दिवस :** सेवा के प्रति प्रतिबद्धता पर केन्द्रित इस उत्सव में १२१ कार्यकर्ता सहभागी हुए।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

Mananeeya Balakrishnanji's Visit to Eranakulam, Trissur & Palakkadu October 2022

- **गीता जयन्ती :** भगवद गीता के महत्त्व को रेखांकित करने के लिए गीता जयन्ती उत्सव मनाया गया, इस उत्सव में १३८ लोग उपस्थित थे।
- **समर्थ भारत पर्व :** भारत के सामर्थ्य का उत्सव मनाने की संकल्पना का प्रचार करनेवाले इस उत्सव में ४४१ प्रतिभागियों का सहभाग रहा।

कर्नाटक विभाग

- **दायित्ववान कार्यकर्ता :** कर्नाटक विभाग में कुल १६१ समर्पित कार्यकर्ता हैं जो विभिन्न गतिविधियों में शामिल हैं।
- **उत्सव :** पूरे वर्ष में २८ उत्सवों का आयोजन किया गया, इन कार्यक्रमों में ३,५९१ लोग सहभागी हुए।
- **स्वाध्याय प्रतियोगिता :** कुल ३३ प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें २,७२२ प्रतिभागी ज्ञान-आधारित प्रतियोगिताओं में शामिल हुए।
- **योग वर्ग :** तीन योग वर्गों में १७ प्रतिभागियों ने योग जीवन पद्धति का अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित किया।
- **संस्कार वर्ग :** १० संस्कार वर्ग चलाए जाते हैं, जिसमें शालेय विद्यार्थियों के सांस्कृतिक एवं नैतिक विकास पर बाल दिया जाता है। सहभागी बच्चों की संख्या ३४१ रही।
- **स्वाध्याय वर्ग :** ५ स्वाध्याय वर्ग चलाए जाते हैं , जिसमें १०१ प्रतिभागी शामिल हुए।
- **केन्द्र वर्ग :** ५ केन्द्र वर्ग शुरू हैं, जिसमें ९४ कार्यकर्ताओं की सहभागिता रही।

Gurupoornima Chowmasik Baithak
20 & 21.08.2023,
Gabbadi, Kanakapura Rd

तमिलनाडु विभाग

- **वि.के. मदुरै :** इस केन्द्र में २५ दायित्ववान कार्यकर्ताओं की एक समर्पित टीम है। ३ कार्य विस्तार और १ सम्पर्क विस्तार है।
- **वि.के. चेन्नई :** यहाँ २ कार्य विस्तार और २ सम्पर्क विस्तार, ३१ दायित्ववान कार्यकर्ताओं की चमू चेन्नई में कार्यरत है।
- **वि.के. तुतुकुडी :** यहाँ २५ दायित्ववान कार्यकर्ताओं की एक चमू के साथ १ कार्य विस्तार और ३ सम्पर्क विस्तार हैं।

ये मुख्य बिन्दु दक्षिण प्रान्त के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में विवेकानन्द केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों , कार्यशालाओं और विस्तार गतिविधियों को प्रदर्शित करते हैं।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

महाराष्ट्र प्रान्त

इस वर्ष महाराष्ट्र में अनेक कार्यक्रम और उपक्रम आयोजित किए गए।

१. युवा नेतृत्व विकास शिविर : इस शिविर की एक नियोजित प्रक्रिया थी। ७,२३५ प्रतिभागियों ने पंजीयन कराया इसमें से ९४० युवाओं का चयन किया गया था। उन्हें भव्य शिविर के लिए एक विशेष ट्रेन में कन्याकुमारी ले जाया गया।

२. संस्कार वर्ग : राज्य में कुल ६७ संस्कार वर्ग चल रहे हैं जिसमें ४,५८९ शालेय विद्यार्थी सहभागी होते हैं। इस वर्ग में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य केन्द्रित पाठ्यक्रम से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बाल दिया जाता है।

३. योग वर्ग : महाराष्ट्र में कुल २२ योग वर्ग हैं जिसमें ३२८ प्रतिभागी नियमित शामिल होते हैं। इन वर्गों में योग प्रशिक्षण और अभ्यास सत्र का समावेश रहता है।

४. परिवार मिलन : परिवार मिलन कार्यक्रम तीन अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किए गए, जिसमें ४११ परिवारों की भागीदारी रही। परिवार मिलन एक कार्यक्रम है जो परिवारों को सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के लिए एक साथ लाता है।

५. मातृ-पितृ पूजन : मातृ-पितृ पूजन समारोह छह अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किए गए, जिसमें ५६१ परिवारों की भागीदारी थी। यह आयोजन माता-पिता के प्रति श्रद्धा-भाव और सम्मान प्रकट करने की एक पद्धति है।

६. केन्द्र प्रार्थना : केन्द्र प्रार्थना, एक सामूहिक प्रार्थना सत्र है जिसमें हर रविवार, ६२० परिवारों के ९७७ व्यक्तियों की भागीदारी रहती है। ये परिवार विवेकानन्द केन्द्र से जुड़े हुए हैं।

महाराष्ट्र प्रान्त में प्रकल्प : महाराष्ट्र प्रान्त में अनेक प्रकल्प हैं, जिनमें सोलापुर में विवेकानन्द केन्द्र VAYAM भी शामिल है। इस प्रकल्प का उद्घाटन महाराष्ट्र के राज्यपाल ने किया था। वि.के. सेवा व प्रशिक्षण प्रकल्प, पिम्पळद, नासिक जिले में है। वि.के. मराठी प्रकाशन विभाग ने पांच नई पुस्तकें प्रकाशित कीं और २१ पुस्तकों का पुनर्मुद्रण किया।

ये गतिविधियां और उपक्रम उल्लेखित वर्ष के दौरान महाराष्ट्र में हुई सांस्कृतिक, शैक्षिक और सामाजिक गतिविधियों को दर्शाती हैं।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

गुजरात प्रान्त

विवेकानन्द केन्द्र के गुजरात प्रान्त में संचालित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत है।

- **दायित्ववान कार्यकर्ता :** ४३४
- **गुरु पूर्णिमा :** २४ कार्यक्रम, १,२०० लोगों की उपस्थिति।
- **विश्व बंधुत्व दिवस :** १७ कार्यक्रम, १,६४८ नागरिकों की उपस्थिति।
- **साधना दिवस :** ८ कार्यक्रम, २५३ कार्यकर्ताओं की उपस्थिति।
- **गीता जयन्ती :** २० कार्यक्रम, ७७५ लोगों की उपस्थिति।
- **समर्थ भारत पर्व एवं स्वामी विवेकानन्द जयन्ती :** १०३ कार्यक्रम, १४,५०० लोगों की उपस्थिति।
- **केन्द्र वर्ग :** ६ वर्ग, ४६ प्रतिभागी।
- **संस्कार वर्ग :** ३८ वर्ग, ७७२ प्रतिभागी।
- **स्वाध्याय वर्ग :** ४ वर्ग, ३५ प्रतिभागी।
- **योग वर्ग :** ५ वर्ग, १३ प्रतिभागी।
- **योग सत्र :** ६ सत्र, १५६ प्रतिभागी।
- **आनंदालय :** ४ आनंदालय, १३७ प्रतिभागी।
- **विमर्श :** पालकत्व का आनन्द – ९०० प्रतिभागी तथा २६ कार्यकर्ता।

ये गतिविधियां और कार्यक्रम गुजरात प्रान्त में विवेकानन्द केन्द्र की सक्रिय भागीदारी को प्रगट करते हैं। 'मनुष्य-निर्माण एवं राष्ट्र पुनरुत्थान' को बढ़ावा देने में विवेकानन्द केन्द्र की गतिविधियों के व्यापक प्रभाव और पहुँच को दर्शाता है।

राजस्थान प्रान्त

राजस्थान प्रान्त में इस वर्ष निम्नलिखित मुख्य गतिविधियाँ हुईं :-

विवेकानन्द सन्देश यात्रा : इस यात्रा ५० दिनों तक चली जिसमें राजस्थान के सभी ३३ जिलों का समावेश है। इस यात्रा उद्घाटन १९ नवम्बर, २०२२ को खेतड़ी में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री दिलीपजी धनगड़ और विवेकानन्द केन्द्र के अध्यक्ष मा. श्री ए. बालकृष्णनजी ने किया। यह यात्रा ७ जनवरी, २०२३ को जोधपुर में विवेकानन्द केन्द्र की उपाध्यक्ष सुश्री निवेदिता भिड़े की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। यात्रा का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं और सन्देशों का प्रसार करना था।

प्रबुद्ध सम्मेलन : बांसवाड़ा ने प्रबुद्ध सम्मेलन का आयोजन किया, जो कि प्रतिभागियों के बीच जागरूकता और ज्ञान को बढ़ावा देने पर केन्द्रित था।

व्यक्तित्व विकास शिविर : जोधपुर में व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य बच्चों और युवाओं के व्यक्तित्व और नेतृत्व कौशल को बढ़ाना था।

कवि सम्मेलन : जयपुर ने एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में कवियों ने अपनी कविताएं सुनायीं।

साहित्य सेवा : भीलवाड़ा में साहित्य सेवा का आयोजन किया गया, जहाँ एक भव्य सार्वजनिक कार्यक्रम में विवेकानन्द केन्द्र द्वारा प्रकाशित साहित्य को सामान्य जनता के लिए उपलब्ध कराया गया। इस आयोजन को व्यापक प्रतिसाद मिला।

सूर्यनमस्कार स्पर्धा : ब्यावर ने सूर्यनमस्कार स्पर्धा का आयोजन किया। यह स्पर्धा सूर्यनमस्कार के अभ्यास पर केन्द्रित था।

गुरु पूर्णिमा : उदयपुर में गुरु पूर्णिमा मनाई गई, जो कि आध्यात्मिक गुरुओं और शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए समर्पित उत्सव है।

संस्कार वर्ग : किशनगढ़ में संस्कार वर्ग नियमित चल रहा है, जिसमें बच्चों के नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक विकास पर बल दिया जाता है।

ये गतिविधियाँ राजस्थान प्रान्त में 'मनुष्य-निर्माण व राष्ट्र पुनरुत्थान' के कार्यों को बढ़ावा देने के लिए विवेकानन्द केन्द्र के प्रयासों को दर्शाती हैं।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रान्त में मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य का समावेश है। यहाँ निम्नलिखित पांच प्रकल्प सक्रिय हैं -:

१. ग्वालियर में विवेकानन्द निडम् : आवासीय शिविरों के लिए उत्कृष्ट सुविधाओंवाले इस विशाल परिसर में पूरे वर्ष विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

२. बीना में विवेकानन्द केन्द्र समर्पण एवं सेवा प्रकल्प : यह प्रकल्प मुख्यतः सेवा गतिविधियों और समाज के कल्याण के लिए निःस्वार्थ समर्पण पर केन्द्रित है।

३. बीना में **विवेकानन्द केन्द्र बीना रिफाइनरी अस्पताल** स्थानीय समाज और रिफाइनरी से सटे गांवों में चिकित्सीय सेवा प्रदान करता है।

४. आनंदालय : आनंदालय बच्चों और छात्रों के समग्र विकास के लिए समग्र शिक्षा और अनुकूल वातावरण प्रदान करता है।

५. विवेकानन्द केन्द्र बुन्देलखण्ड, झांसी।

मध्य प्रान्त के ये प्रकल्प दर्शाते हैं कि विवेकानन्द केन्द्र इस क्षेत्र में कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के विभिन्न पहलुओं को बढ़ावा दे रहा है।

हरियाणा प्रान्त

हरियाणा प्रान्त की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत है।

१. पानीपत में किशोरी विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम : यह कार्यक्रम मुख्यतः किशोरियों के विकास और सशक्तिकरण पर केन्द्रित था।

२. रेवाडी में उत्तिष्ठत भारत उत्थान : यह कार्यक्रम स्वामी विवेकानन्द के मूल्यों और आदर्शों को बढ़ावा देने तथा व्यक्तियों को आगे बढ़ने और राष्ट्र की प्रगति में योगदान करने के लिए प्रेरित करने पर केन्द्रित था।

३. फरीदाबाद में युवा कार्यशाला : फरीदाबाद में एक युवा कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्देश्य विभिन्न गतिविधियों और सत्रों के माध्यम से युवाओं को सहभागी करना और उन्हें सक्षम बनाना था।

४. पानीपत में साधना दिवस : कार्यकर्ताओं ने विवेकानन्द केन्द्र के संस्थापक माननीय एकनाथजी का स्मरण किया और उनके द्वारा दिए गए मिशन को पूरा करने का संकल्प लिया।

५. पानीपत में चौमासिक बैठक : भविष्य की गतिविधियों और उपक्रमों के लिए चर्चा, समीक्षा और योजना बनायी गई।

६. भिवानी में युवा प्रेरणा प्रतियोगिता : युवाओं को अपने प्रयासों में उत्कृष्टता प्राप्त करने और राष्ट्रीय विकास के लिए उनकी प्रतिबद्धता हेतु प्रेरित करने के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हरियाणा प्रान्त में ये गतिविधियां युवा विकास, सशक्तिकरण एवं प्रतिभागियों में सेवा और समर्पण की भावना को बढ़ावा देने पर केन्द्रित थीं।

पंजाब प्रान्त

पंजाब प्रान्त की गतिविधियों का विवरण।

१. लुधियाना में किशोरी विकास प्रशिक्षण : यह कार्यक्रम किशोरियों के विकास और सशक्तिकरण पर केन्द्रित रहा।

२. पंचकुला में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस : योग के अभ्यास से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए इस दिन को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है।

Ma. Hanuji's Pravas Samaprk with Dr Laxmikanta Chawla, Durgyana Madir

३. उपाध्यक्ष माननीय हनुमन्तरावजी का प्रान्त में प्रवास : उनके इस प्रवास के दौरान संवाद, बैठकें हुईं और उनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

पंजाब प्रान्त में केन्द्र के कार्यकर्ता एवं विभिन्न उपक्रम।

पंजाब प्रान्त में ७ नगर स्थान, ४ कार्य स्थान और ७५ दायित्ववान कार्यकर्ता हैं।

पंजाब प्रान्त की सभी गतिविधियां "मनुष्य-निर्माण व राष्ट्र पुनरुत्थान" पर केन्द्रित है, और इस क्षेत्र में केन्द्र के कार्यों को गतिमान करने के लिए विवेकानन्द केन्द्र के उपाध्यक्ष के प्रवास महत्त्व को दर्शाता है।

उत्तर प्रान्त

उत्तर प्रान्त में केन्द्र कार्य का विवरण।

१. कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर : उत्तर प्रान्त में दो कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य २६२ युवाओं के नेतृत्व, कौशल और उनकी वैचारिक स्पष्टता के साथ ही विवेकानन्द केन्द्र के 'मनुष्य-निर्माण व राष्ट्र पुनरुत्थान' के ध्येय के लिए प्रतिबद्ध करना था।

२. यंग इंडिया नो योरसेल्फ : इस वार्षिक उपक्रम का उद्देश्य महाविद्यालयीन युवा छात्रों में आत्म-शोध की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना था, साथ ही अपने राष्ट्र को जानने तथा मनुष्य निर्माण व राष्ट्र पुनरुत्थान हेतु कार्य करने की उनमें इच्छाशक्ति का जागरण करना।

३. परीक्षा दे हँसते-हँसते कार्यशाला : ७० विद्यार्थियों के लिए यह कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला प्रतिभागियों को परीक्षा सम्बन्धित तनाव का प्रबंधन करने और उनमें सकारात्मक दृष्टि के विकास

को बढ़ावा देनेवाला है। यह परीक्षा की तैयारी के लिए सहायक है।

उल्लेखनीय है कि इन गतिविधियों में ४८ विद्यालय के कुल १ विदयार्थियों ६९१,और ३१ महाविद्यालय के १ युवा ३००,छात्र शामिल थे। उत्तर प्रान्त द्वारा की गई इस पहल में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के छात्रों की भागीदारी और उनकी सक्रियता को दर्शाता है।

उत्तर प्रान्त में ये गतिविधियां युवाओं के विकास, उनके प्रशिक्षण और मार्गदर्शन पर केन्द्रित है।

उत्तर प्रदेश प्रान्त

उत्तर प्रदेश प्रान्त में २ नगर स्थान और ३ कार्यस्थान हैं। ये केन्द्र के माध्यम से राज्य में विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

उत्तर प्रदेश में विवेकानन्द केन्द्र

उत्तर प्रदेश प्रान्त में कार्य का विवरण।

१. विवेकानन्द सन्देश यात्रा : उत्तर प्रदेश में रथ पर स्थापित स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा के साथ उनके सन्देशों और शिक्षाओं का प्रसार करने के उद्देश्य से 'विवेकानन्द सन्देश यात्रा' का आयोजन किया गया।

२. योजक वर्ग : यह वर्ग नेतृत्व की भूमिका का वहन करने और संगठन के भीतर विभिन्न गतिविधियों को व्यवस्थित करने हेतु कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और उन्हें सक्षम बनाने पर केन्द्रित रहा।

३. व्यक्तित्व विकास कार्यशाला : इसका उद्देश्य प्रतिभागियों के व्यक्तित्व और नेतृत्व कौशल को विकसित करना था।

४. योग दिवस : योग को बढ़ावा देने और अभ्यास करने के साथ ही इस सम्बन्ध में जागरूकता लाने के लिए उत्तर प्रदेश प्रान्त ने योग दिवस का आयोजन किया।

५. सांस्कृतिक प्रतियोगिता : इस आयोजन में १२९ विद्यालय के ३,१३३ छात्रों और ३१

महाविद्यालय के १,०९७ युवा छात्र सहभागी हुए, यह सहभागिता उल्लेखनीय है।

उत्तर प्रदेश प्रान्त में ये गतिविधियां स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं को प्रसारित करने, नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देने, व्यक्तित्व विकास और सांस्कृतिक चेतना पर बल देने, तथा मनुष्य-निर्माण व राष्ट्र पुनरुत्थान के कार्यों पर केन्द्रित है।

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश में, विवेकानन्द केन्द्र की संगठनात्मक संरचना में ६ विभाग, १२ नगर स्थान, ५ कार्यस्थान और कुल ७८९ दायित्ववान कार्यकर्ताओं का समावेश है।

२०२२ २०२३-वर्ष के दौरान आयोजित मुख्य गतिविधियां इस प्रकार हैं -:

१. केन्द्र वर्ग : ४५ केन्द्र वर्ग, सहभागियों की संख्या ४१८ ।

२. संस्कार वर्ग : बच्चों के नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ११ संस्कार वर्ग चलाए जाते हैं जिनमें १९५ प्रतिभागियों का सहभाग रहता है।

३. योग सत्र : ६ योग सत्र में १०२ प्रतिभागियों का समावेश रहा।

४. शालेय स्वाध्याय प्रतियोगिता : १२४ विद्यालयों में स्वाध्याय प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता के लिए ६,७५९ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया, जिसमें ५,४२१ छात्र शामिल हुए। कार्यशाला में १,८५० विद्यार्थियों की भागीदारी रही।

५. अमृत परिवार मिलन : इस वर्ष अमृत परिवार मिलन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

६. उठो! जागो! प्रतियोगिता : उठो! जागो! प्रतियोगिता आयोजित की गई।

७. व्यक्तित्व विकास शिविर : व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किए गए, विशेष रूप से युवा छात्रों को स्वामी विवेकानन्द की कल्पना के अनुसार "मनुष्य निर्माण और राष्ट्र पुनरुत्थान" के मिशन के लिए प्रशिक्षित करने के लिए लक्षित किया गया।

अरुणाचल प्रदेश में ये गतिविधियां विवेकानन्द केन्द्र द्वारा चलाये जा रहे विविध प्रकार के कार्यक्रमों और पहलों को दर्शाती हैं। वे सांस्कृतिक मूल्यों, शिक्षा, व्यक्तिगत विकास, योग के अभ्यास को बढ़ावा देने और प्रतिभागियों को स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण और शिक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार करने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

असम प्रान्त

विवेकानन्द केन्द्र के असम प्रान्त में संचालित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है :-

संगठनात्मक संरचना

- विभाग : ११
- नगर स्थान : २३
- कार्यस्थान : २२
- प्रकल्प स्थान : २९४
- दायित्ववान कार्यकर्ता : २,७४०

उत्सव

गुरु पूर्णिमा : १५६ कार्यक्रम जिनमें ३,४२६ लोग उपस्थित थे।

विश्व बन्धुत्व दिवस : ३४१ कार्यक्रम, उपस्थिति १२,६१९

साधना दिवस : १२० कार्यक्रम, उपस्थिति १२,५८८

गीता जयन्ती : ११३ कार्यक्रम, उपस्थिति १०,४५०

समर्थ भारत पर्व - स्वामी विवेकानन्द जयन्ती : १५९ कार्यक्रम, उपस्थिति २२,३८०

शालेय एवं महाविद्यालयीन प्रतियोगिताएँ :

शालेय प्रतियोगिता : कार्यशालाएँ : विभिन्न स्कूलों से ३४९ प्रतिभागी।

महाविद्यालयीन प्रतियोगिता : कार्यशालाएँ : विभिन्न कॉलेजों से १,१९२ प्रतिभागी।

सत्र/प्रतिमान

योग सत्र : १२४ सत्र, २९३३ प्रतिभागी।

योग प्रतिमान : ५ कार्यशाला, ३६८ प्रतिभागी।

वर्ग

केन्द्र वर्ग : ४३ वर्ग, ७६३ उपस्थिति।

योग वर्ग : १८७ वर्ग, २,७६६ उपस्थिति।

स्वाध्याय वर्ग : ३२ वर्ग, ५१६ उपस्थिति।

संस्कार वर्ग : २१८ वर्ग, ३,५०६ उपस्थिति।

प्रान्त कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर : १६७ प्रतिभागी।

राष्ट्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर : १३ प्रतिभागी।

ये गतिविधियां और कार्यक्रम असम प्रान्त में विवेकानन्द केन्द्र की सक्रिय भागीदारी और सहभागिता को दर्शाते हैं। उत्सवों, प्रतियोगिताओं और वर्गों में बड़ी संख्या में लोगों की सहभागिता असम में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और शैक्षिक विकास को बढ़ावा देने में विवेकानन्द केन्द्र की पहल के प्रभाव और पहुँच को प्रदर्शित करते हैं।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

पश्चिम बंग प्रान्त

पश्चिम बंग प्रान्त में, पश्चिम बंगाल के २६ जिलों में से १० जिलों का समावेश है। संगठनात्मक संरचना इस प्रकार है :-

१. विभाग : पश्चिम बंग प्रान्त में ६ विभाग हैं।

२. नगर स्थान : पश्चिम बंग प्रान्त में १ नगर स्थान है।

३. कार्य स्थान : पश्चिम बंग प्रान्त में १२ कार्य स्थान हैं।

४. प्रकल्प स्थान : पश्चिम बंग प्रान्त में ३ प्रकल्प स्थान हैं। ये प्रकल्प विवेकानन्द केन्द्र द्वारा शुरू की गई विशिष्ट परियोजनाओं या पहलों के लिए समर्पित हैं।

५. नियोजित स्थान : पश्चिम बंग प्रान्त में ४ नियोजित स्थान हैं।

बिहार प्रान्त

बिहार प्रान्त की संगठनात्मक संरचना

विभाग ३, नगर स्थान ४, कार्य स्थान २, ग्राम स्थान ६ और दायित्ववान कार्यकर्ताओं की संख्या १०१ है।

वर्षभर की गतिविधियों का विवरण

१. योग वर्ग : ३ योग वर्ग, ३२ प्रतिभागी।

२. संस्कार वर्ग : ५ संस्कार वर्ग, ९९ प्रतिभागी।

३. स्वाध्याय वर्ग : ३ स्वाध्याय वर्ग, १६ प्रतिभागी।

४. केन्द्र वर्ग : ३ केन्द्र वर्ग, ४८ प्रतिभागी।

५. युवा नेतृत्व विकास अभियान : इस अभियान के अन्तर्गत ८४ महाविद्यालयों से सम्पर्क किया गया और जिसमें १२७८ छात्रों ने पंजीकरण कराया। युवाओं में नेतृत्व कौशल के विकास पर केन्द्रित १० कार्यशालाएं ली गईं जिसमें ५८९ युवाओं ने भाग लिया।

विवेकानन्द केन्द्र द्वारा संचालित ये गतिविधियां और कार्यक्रम बिहार प्रान्त में स्थानीय समाज के साथ जुड़ाव, सांस्कृतिक

मूल्य संवर्धन, योग अभ्यास और युवा नेतृत्व विकास की पहल पर प्रकाश डालते हैं।

ओडिशा प्रान्त

ओडिशा प्रान्त में विवेकानन्द केन्द्र की गतिविधियां विभिन्न स्थानों पर आयोजित की जाती हैं और इसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं।

संगठनात्मक संरचना :

- नगर स्थान : ९
- कार्य स्थान : १
- प्रकल्प स्थान : ३९
- ग्राम स्थान : ३९
- दायित्ववान कार्यकर्ता : ३१४

उत्सव और शिविर :

गुरु पूर्णिमा : ४० स्थानों पर मनाया गया जिसमें १,४७७ लोग उपस्थित थे।

विश्व बंधुत्व दिवस : ११ स्थानों पर मनाया गया जिसमें १,१८९ लोग उपस्थित थे।

साधना दिवस : ९ स्थानों पर मनाया गया जिसमें २३० प्रतिभागी शामिल हुए।

गीता जयन्ती : १३ स्थानों पर मनाई गई जिसमें ४७१ लोग उपस्थित थे।

संस्कार वर्ग प्रशिक्षण शिविर : २ शिविरों में ३६ प्रतिभागी शामिल थे।

स्थानिक कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर : इस १ शिविर में १९ शिविरार्थी सम्मिलित थे।

प्रान्त कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर : कुल ५८ प्रतिभागी।

केन्द्र वर्ग : ९ स्थानों पर १२६ प्रतिभागी।

योग वर्ग : १६ स्थानों पर २४५ प्रतिभागी।

स्वाध्याय वर्ग : ६ स्थानों पर २८ प्रतिभागी।

संस्कार वर्ग : २६ स्थानों पर ४६५ प्रतिभागी।

योग सत्र : २१ स्थानों पर आयोजित, ४२७ प्रतिभागी शामिल।

अमृत महोत्सव यात्रा :

समाविष्ट जिला : २०
समाविष्ट शहर/कस्बा : ३०
महाविद्यालयों से भेंट : ५५
विद्यार्थियों से संवाद : ४८०९ छात्र
भरे गए संकल्प पत्र : ६५८
सार्वजनिक कार्यक्रमों में भागीदारी : ५०००

ये गतिविधियां और कार्यक्रम ओडिशा प्रान्त में विवेकानन्द केन्द्र की व्यापक पहुँच और भागीदारी को दर्शाते हैं, जो समाज के समग्र विकास और कल्याण में योगदान देता है।

तेलुगु प्रान्त

तेलुगु प्रान्त में आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्य शामिल हैं। यहाँ तेलुगु प्रान्त में करे का विवरण प्रस्तुत है।

संगठनात्मक संरचना :

नगर स्थान : तेलुगु प्रान्त के अन्तर्गत ३ नगर स्थान हैं।
कार्य स्थान : ८ कार्य स्थान हैं।
विभाग : तेलुगु प्रान्त को ५ विभागों में वर्गीकृत किया गया है।
प्रकल्प स्थान : दो प्रकल्प स्थान हैं।
दायित्ववान कार्यकर्ता : १२३ समर्पित कार्यकर्ता विभिन्न गतिविधियों में शामिल हैं।
केन्द्र वर्ग : ४ केन्द्र वर्ग, जिसमें ८५ लोगों की उपस्थिति रहती है।
योग वर्ग : ४ योग वर्ग, जिसमें योग के अभ्यास में रुचि रखनेवाले ६५ प्रतिभागियों की सहभागिता रहती है।
स्वाध्याय वर्ग : ५ स्वाध्याय वर्ग, ५५ प्रतिभागी।
संस्कार वर्ग : ११ संस्कार वर्ग में १४० प्रतिभागियों का समावेश है। इस वर्ग है बच्चों के सांस्कृतिक और नैतिक विकास पर केन्द्रित है।

Sampark with
Sri Sri Chinna Jeeyar Swamiji

ये गतिविधियां स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को बढ़ावा देने और मनुष्य-निर्माण तथा राष्ट्र पुनरुत्थान के मिशन के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए की जाती हैं। उपर्युक्त विवरण विभिन्न कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के संचालन में तेलुगु प्रान्त की सक्रिय भागीदारी और प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

कन्याकुमारी स्थिति स्मारक और प्रदर्शनियाँ

भारतीय राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू तथा तमिलनाडु के राज्यपाल माननीय आर.एन. रवि विवेकानन्द शिला स्मारक दर्शनार्थ आए।

विवेकानन्द शिला स्मारक और प्रदर्शनियों के दर्शनार्थी		
क्र.सं.	**नाम**	**यात्रियों की संख्या (2022-2023)**
१	विवेकानन्द शिला स्मारक	२०,८२,२१२
२	उत्तिष्ठत! जाग्रत!! प्रदर्शनी	२५,५७८
३	परिव्राजक विवेकानन्द प्रदर्शनी	१८,५७७
४	गंगोत्री प्रदर्शनी	२,१७७
५	ग्रामोदय दर्शन पार्क	२,१६३
६	रामायण दर्शनम्	१,२०,९५५
७	यात्री निवास में ठहरनेवाले प्रवासियों की संख्या	१,५४,१७३
८	विभिन्न संगठनों द्वारा विवेकानन्दपुरम् परिसर में आयोजित कार्यक्रम	३६ शिविर, सहभागी ८,४३०

विवेकानन्द शिला स्मारक एवं विवेकानन्द केन्द्र

प्रशासकीय मुख्यालय

विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी में विभिन्न गतिविधियां

१. विवेकानन्द शिला स्मारक और विवेकानन्द केन्द्र का प्रशासनिक मुख्यालय

२. कन्याकुमारी स्थित विवेकानन्दपुरम् परिसर में स्वच्छ और शान्त वातावरण में दर्शनार्थियों को सामान्य दरों पर उत्तम आवास उपलब्ध।

३. विवेकानन्दपुरम् परिसर में डबल बेडेड डीलक्स एवं एसी कक्ष तथा एसी कॉटेज भी उपलब्ध हैं।

४. जीवनव्रतियों/शिक्षार्थियों/सेवाव्रतियों/वानप्रस्थियों के रूप में केन्द्र से जुड़नेवाले समर्पित कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण केन्द्र एवं निवास व्यवस्था।

५. विवेकानन्द शिला स्मारक की देखभाल।

६. एलोपैथिक एवं सिद्ध औषधालय में दर्शनार्थियों के लिए बाह्य रोगी चिकित्सा सुविधा उपलब्ध।

७. केन्द्र परिसर में ठहरनेवाले दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए परिसर में ही उपलब्ध सुविधाएं – अ) एटीएम सुविधा के साथ भारतीय स्टेट बैंक की शाखा, आ) डाकघर, इ) शाकाहारी रेस्तरां, ई) २४ घंटे पानी और बिजली की आपूर्ति, उ) गौसेवा तथा ऊ) ग्रंथालय (पुस्तकालय एवं वाचनालय)

८. ध्यान मन्दिर (दैनिक प्रातःस्मरण सुबह ५.१५ बजे, गीता पठन सुबह ७.३० बजे और भजन ६.३० बजे)

९. हायर सेकेंडरी स्कूल में लगभग १५०० स्थानीय विद्यार्थियों के लिए कैटरिंग सुविधा।
१०. विवेकानन्द मंडपम् एवं एकनाथजी की समाधि
११. विवेकानन्दपुरम् समुद्र-तट तथा सूर्योदय स्थल
१२. रामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य की पुस्तक स्टॉल
१३. एसी ऑडिटोरियम – २५० सीटें
१४. मयूर अभयारण्य

विवेकानन्दपुरम, कन्याकुमारी में आवास के लिए :

Online Accommodation Booking : https://yatra.vrmvk.org

S H I B I R C A L E N D E R - 2023

(For General Public)

NAME OF THE SHIBIR	DATES	AGE	CAMP DONATION
Spiritual Retreat (Eng & Hindi)	Aug 8 – 14	18 to 65	Rs.3000/-
Yoga Shiksha Shibir (Eng & Hindi)	Nov 22 – Dec 6	18 to 65	Rs.4000/-
Yoga Certificate Course (Eng & Hindi)	Nov 22 – Dec 21	18 to 65	Rs.10000/-

Further details: E-mail:camps@vkendra.org / Phone: 0462-247012
Vivekananda Kendra, Vivekanandapuram,
Kanyakumari – 629 702
Visit : www.vkendra.org for more details

Certificate Course in Yoga @Kanyakumari
https://www.vrmvk.org/camps

श्रद्धांजलि

१. प्रव्राजिका भक्तिप्राण : श्री सारदा मिशन के अध्यक्ष, स्मृति दिवस ११ दिसम्बर, २०२२
२. स्वामिनी गीतानन्दाजी : पूर्व जीवनव्रती एवं महाराष्ट्र प्रान्त संगठक।
३. स्वामी करुणानन्द महाराज : विवेकानन्द आश्रम, वेल्लीमलाई से सम्बन्धित।
४. श्रीमती वाणी जयराम : लोकप्रिय गायिका जिन्होंने केन्द्र के लिए दो धर्मादाय कार्यक्रम किए।
५. श्री सूरसेनजी जेना : पूर्व ओडिशा प्रान्त संचालक।
६. श्री एल. माधवनजी : विवेकानन्द केन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, चेन्नई से सम्बन्धित।
७. श्री के. बालासुब्रमण्यम् : विवेकानन्द शिला स्मारक और विवेकानन्द केन्द्र के कर्मचारी।
८. श्री एन.आर. वाघमारे : बड़ौदा के शुभचिन्तक।
९. श्रीमती सुमन जोशी : वि.के., पुणे की पूर्व कार्यकर्ता एवं दानदाता।
१०. श्री विनायक उर्फ आबा नान्दुर्डीकर : वि.के. मराठी प्रकाशन विभाग, पुणे के पूर्व सचिव।
११. श्रीमती वसंती एम. साल्वेकर : उपनिषदों के अनुवादक (मराठी से हिन्दी में १० पुस्तकें)।
१२. श्रीमती सुनंदा चटर्जी : स्वर्गीय श्री कपिल चटर्जी की पत्नी, जो कि १९९२ में विवेकानन्द भारत परिक्रमा में पूर्णकालिक रूप से सहभागी थीं।
१३. डॉ. एन. गोपाल कृष्णनजी : हिन्दू धर्म के प्रतिपादक।

१४. श्री लत्सम खिमुन : रांगफ्रा फेथ प्रमोशन सोसाइटी (आर.एफ.पी.एस.), अरुणाचल प्रदेश के संस्थापक और वि.के.आई.सी. सम्मान-२०१३ से सम्मानित।

श्रद्धांजलि, यह सम्मान और स्मरण का एक भाव है, जो उनके योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है और उनकी आत्मा को शान्ति के लिए प्रार्थना का भाव अर्पित करता है।

विवेकानन्द केन्द्र समाचार – २०२२ -२०२३

अप्रैल २०२२ से मार्च २०२३ की अवधि में
विवेकानन्द शिला स्मारक के कुछ महत्त्वपूर्ण दर्शनार्थियों की सूची

- श्री प्रेस्टोन तिनसोंग (मेघालय के उप मुख्यमंत्री) १६ अप्रैल, २०२२
- श्री हरिकृष्ण प्रसाद, पुलिस अधीक्षक, कन्याकुमारी जिला।
- श्री गणपति भट्ट (आईटी के मुख्य आयुक्त) ३ जून, २०२२
- श्री गोपाल नारायण सिंह, सांसद राज्यसभा, बिहार १२ जून, २०२२
- श्री रामकृष्ण भुजन, श्रम रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार ९ जुलाई, २०२२
- डॉ. भागवत किशन राव कराड (राज्य वित्त मंत्री भारत सरकार) १३ जुलाई, २०२२
- न्यायमूर्ति मुनीश्वरनाथ भंडारी (मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश) ३० जुलाई, २०२२
- माननीय थिरु न्यायमूर्ति पी.एन. प्रकाश (न्यायाधीश मद्रास उच्च न्यायालय) ९ अगस्त, २०२२
- श्री ललित शर्मा, ब्रिगेडियर, भारतीय सेना।
- श्री डी.एस.चौहान, डी.आई.जी., भारतीय तट रक्षक १५ अगस्त, २०२२
- श्री राकेश अग्रवाल, आईपीएस (पंजाब सी.बी.आई. के डीआइजी) १६ अगस्त, २०२२
- श्री राहुल गांधी (पूर्व लोकसभा सदस्य) ७ सितम्बर, २०२२
- श्री पी.एस. श्रीधरन पिल्लई (गोवा के राज्यपाल) ११ सितम्बर, २०२२
- मेजर जनरल श्री धीरज मोहन (दक्षिणी कमान) १५ सितम्बर, २०२२
- श्री सुशील कुमार गुप्ता, म.प्र. राज्य सभा
- श्री जीतन राम मांझी (बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री) २ अक्टूबर, २०२२
- श्री भगवंत खूबा (नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री) ४ अक्टूबर, २०२२
- श्री एस.के. मोहनका (डीआईजी, सीआईएसएफ, बैंगलुरु) १३ अक्टूबर, २०२२
- श्री रामचन्द्र जांगड़ा, राज्य सभा सदस्य, हरियाणा १९ अक्टूबर, २०२२
- श्री मोहित मल्होत्रा, मेजर जनरल २८ अक्टूबर, २०२२
- न्यायमूर्ति आर.सी. खुल्बे, उच्च न्यायालय, उत्तराखंड ७ दिसम्बर, २०२२
- श्री एस.ईश्वर, मंत्री, सिंगापुर गणराज्य १६ दिसम्बर, २०२२
- श्री सरोज शर्मा, अध्यक्ष, एनआईओएस, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार २३ दिसम्बर, २०२२
- न्यायमूर्ति श्री सुरेश कुमार, मद्रास उच्च न्यायालय, चेन्नई २५ दिसम्बर, २०२२
- श्री रघुबर दास, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री २७ दिसम्बर, २०२२
- डॉ. अनिल अग्रवाल, सांसद, राज्यसभा, उत्तर प्रदेश १ जनवरी, २०२३
- श्री फारूक अब्दुल्ला, पूर्व मुख्यमंत्री (जम्मू-कश्मीर) ७ जनवरी, २०२३
- श्री सारा किर्लेव, दक्षिण भारत के ऑस्ट्रेलियाई महावाणिज्य दूतावास १८ फरवरी, २०२३
- स्वामी शिवानन्द, वाराणसी, २४ फरवरी, २०२३
- इंजी. श्री तागेव टाकी, कृषि मंत्री, अरुणाचल प्रदेश
- न्यायमूर्ति राजेन्द्र सिंह, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद २६ फरवरी, २०२३
- श्री चन्द्र कुमार, कृषि एवं पशुपालन मंत्री, हिमाचल प्रदेश २८ फरवरी, २०२३
- श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, भारत की महामहिम राष्ट्रपति, १८ मार्च, २०२३
- श्रीमती लक्ष्मी रवि, तमिलनाडु के राज्यपाल आर.एन.रवि की पत्नी १८ मार्च, २०२३

विवेकानन्द शिला स्मारक, कन्याकुमारी के विशेष दर्शनार्थी

१९९७ के नोबल पुरस्कार विजेता जेरी व्हाइट ने विवेकानन्द शिला स्मारक का दर्शन किया।

श्री के.एस. रामकृष्णन, आई.ए.एस., कन्याकुमारी जिले के तत्कालीन कलेक्टर १७ जनवरी, २०२३ को विवेकानन्द शिला स्मारक आए।

विवेकानन्द शिला स्मारक पर पंगोड़े सैन्य स्थान, तिरुवनंतपुरम के एम्फिबीयस जवानों ने स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर ७५ फिट लम्बी राष्ट्रध्वज फहराया।

क्या आप स्वामी विवेकानन्द की पुकार सुन रहे हैं?

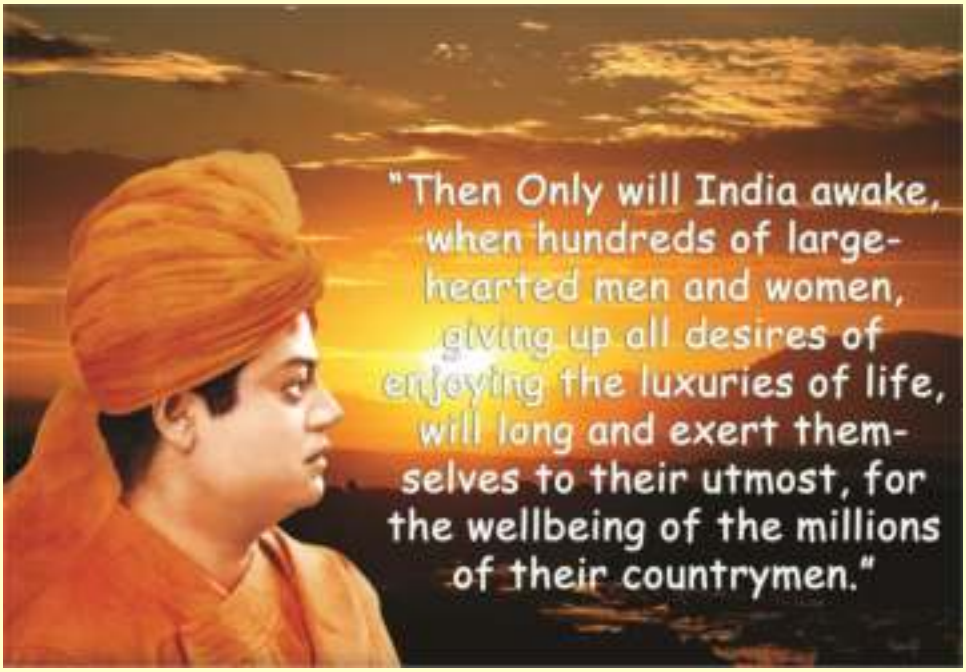

"भारत तभी जागेगा, जब विशाल हृदयवाले सैकड़ों स्त्रीविलास और सुख की सभी इच्छाओं -पुरुष अपने भोग- उन करोड़ों भारतीयों के कल्याण के लिए सचेष्ट ,को त्याग करहोंगे, जो दरिद्रता तथा मूर्खता के अगाध सागर में निरन्तर नीचे डूबते जा रहे हैं।"

क्या आप उन लोगों में से हैं जिनके मन में स्वामीजी हैं? आइए, आध्यात्म प्रेरित सेवा संगठन - विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी के पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में राष्ट्र की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित करें।

यह कोई करियर नहीं है – वरन एक मिशन है। विवेकानन्द केन्द्र आपके योगक्षेम का ध्यान रखेगा।

सभी आइए – समर्पित हों और सेवा कार्य में जुट जाएं।

ईमेल करें : info@vkendra.org

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखें : www.vkendra.org

आह्वान

विवेकानन्द केन्द्र उन युवकों और युवतियों के लिए एक अवसर है जो अभावग्रस्त समाज की सेवा करके एक सार्थक जीवन जीना चाहते हैं। विवेकानन्द केन्द्र के माध्यम से सेवानिवृत्त किन्तु ऊर्जावान व्यक्ति भी राष्ट्र के लिए अपनी सेवाएं दे सकते हैं। 'मनुष्य-निर्माण और राष्ट्र पुनरुत्थान' के कार्य में अपना पूरा जीवन या अपने जीवन के कम से कम कुछ मूल्यवान वर्षों को समर्पित करनेवालों का स्वागत है।

केन्द्र उन सभी से भी अपील करता है जो हमारी मातृभूमि के उत्थान के लिए अपना समय और धन अर्पित करना चाहते हैं और अपने उन भाइयों की सहायता के लिए जो दूरस्थ क्षेत्रों में रहते हैं..... और इस दिशा में आप अपना योगदान अवश्य दें, -

१. हमारे किसी भी शाखा केन्द्र या प्रकल्प में अपनी सेवाएं, विशेषज्ञता और या आर्थिक सहायता प्रदान करें।
२. योग्य और सक्षम सेवाभावी बुद्धिमान युवाओं, पुरुषों और महिलाओं दोनों को हमसे जुड़ने के लिए प्रेरित करें।
३. योग्य और सक्षम युवाओं को हमारे स्कूल में शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित करें।
४. केन्द्र की परिपोषक योजना में सहभागी होकर परिपोषक बनें।
५. हमारी पत्रिकाओं के सदस्य बनें।
६. हमारे प्रकाशन, डायरी, कैलेंडर और ग्रीटिंग कार्ड्स खरीदें।
७. हमारे स्कूलों में अभावग्रस्त विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यय को प्रायोजित करें।
८. आप सहभागी हों और औरों को हमारे शिविरों में सहभागी होने के लिए प्रेरित करें।
९. केन्द्र की विभिन्न सेवा प्रकल्पों के लिए उदारतापूर्वक दान करें।

विवेकानन्द केन्द्र को दिए गए समस्त दान राशि आयकर अधिनियम की धारा 80- G. के अन्तर्गत कर मुक्त है।

राशि का भुगतान भारतीय स्टेट बैंक, विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी में देय "Vivekananda Kendra" के नाम, नकद या चेक/मनी ऑर्डर/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा या सीधे हमारे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया कोर बैंकिंग खाता संख्या 11305877361 (IFSC Code: SBIN0003780) में जमा करके किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

महासचिव,
विवेकानन्दपुरम्,
कन्याकुमारी - 629702
फोन : 04652-247012
ईमेल : info@vkendra.org

आपका योगदान महत्त्वपूर्ण है

विवेकानन्द केन्द्र सामाजिक रूप से प्रासंगिक सेवा गतिविधियों में योगदान के लिए सभी को जुड़ने का अवसर प्रदान करता है –

परिपोषक	बाल शिक्षा	सामान्य
परिपोषक बनें, और समर्पित कार्यकर्ताओं को उनके योगक्षेम के लिए सहयोग प्रदान कर आप भी संतोष पाएं।	अगली पीढ़ी को शिक्षित करने में सहयोग - उत्तर-पूर्व के अभावग्रस्त बच्चों और कहीं भी अभावग्रस्त बालकों को आपके सहयोग की आवश्यकता है। आप उनका भविष्य बना सकते हैं।	प्रकल्पों, राहत कार्यों, जागरूकता अभियान, स्वास्थ्य शिविरों आदि नियमित गतिविधियों के संचालन के लिए।
निर्माण कार्य	**ओन ए रूम स्कीम**	
स्कूल भवनों, छात्रावासों, प्रकल्प भवनों, औषधालयों, सभागारों के लिए - सेवा गतिविधियों में सहायता करनेवाली ऐसी कई निर्माण कार्यों के लिए - आप सहयोग कर सकते हैं।	विवेकानन्द केन्द्र की यह योजना है जिसके माध्यम से विवेकानन्दपुरम् परिसर में अपने नाम पर एक कक्ष हो सकता है। इसी प्रकार का दान देकर विवेकानन्द शिला स्मारक पर अपना नाम जोड़ सकते हैं।	

आप यहाँ से दान कर सकते हैं -

http://donate.vkendra.org/

और नवीनीकृत करने" के कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ एनजीओ श्रेणी में दूसरा पुरस्कार प्रदान किया।

और नवीनीकृत करने" के कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ एनजीओ श्रेणी में दूसरा पुरस्कार प्रदान किया।

सोशल मीडिया पर विवेकानन्द केन्द्र

YouTube

Main Channel https://youtube.com/vrmvk	Activity Channel https://youtube.com/vkactivity
Padawali https://youtube.com/padawali	SahityaSeva https://youtube.com/vkprakashan

Facebook Page
https://fb.com/VivekanandaKendraKanyakumari

Twitter:
https://twitter.com/vkendra

Flickr
https://flickr.com/vivekanandakendra

Instagram
https://instagram.com/vrmvk

Swami Vivekananda Daily Quotation (Hindi & Eng)
Telegram Channel : https://t.me/dailyvivek
VK Update Telegram Channel : https://t.me/vkendra

Blog : https://blog.vrmvk.org

प्रिय संरक्षकों, दानदाताओं, सदस्यों, शुभचिन्तकों -

कृपया अपने संचार विवरण (ईमेल/मोबाइल/व्हाट्सएप/आदि) को अपडेट करें

ताकि हम आपको और आपके परिवार के लिए उपयोगी डिजिटल पत्रिका, योग और बच्चों के शिविरों और इसी तरह की गतिविधियों के बारे में उपयोगी जानकारी भेजकर आपकी उत्तम सेवा दे सकें। इस समय और भविष्य में भी, ऑनलाइन संचार आगे की स्थान बना रहा है और यह सबसे शक्तिशाली माध्यम होगा। तो, कृपया विश्व को एक साथ जोड़ने के अपने यज्ञ में हम भी डिजिटल रूप से जुड़ें।

कृपया यहाँ से अपडेट करें :

http://update.vkendra.org

"मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य है -
प्रत्येक घर में सनातन धर्म का सन्देश पहुँचना और स्वामी विवेकानन्द
जैसे महान द्रष्टा द्वारा प्रचारित और परिकल्पित मनुष्य-निर्माण अभियान को
बड़े पैमाने पर प्रारम्भ करने का मार्ग प्रशस्त करना।"

- श्री एकनाथजी रानडे,
संस्थापक - विवेकानन्द केन्द्र